साांध्य दैनिक

4PM

जिद...सच की

मूल्य ₹ 3/-

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_SanjayS | YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 11 ● अंकः 342 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, सोमवार 19 जनवरी, 2026

यदि आप सफल होना चाहते हैं तो आपको स्वीकार्य सफलता के घिसे-पिटे रास्तों की बजाय नए रास्तों पर चलना चाहिए।

-जॉन डी. रॉकफेलर

38 साल में पहली बार न्यूजीलैंड ने भारत में... 7 | उत्तर भारत की महिलाओं पर विवादित... 3 | भाजपा सरकार लापरवाह और... 2

अब सिनेमा फिर से इंसान से बात करेगा

बेटी वन्या के जन्मदिन से संजय शर्मा ने लांच किया 4PM FILMS

» आखिर मर्द क्यों रोता है जैसे संवेदनशील विषय से दर्शकों के सामने पेश की पहली शार्ट फिल्म 'इश्तियाक'

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आज के दौर में जब सिनेमा तेज आवाज, त्वरित कट्स और सतही भावनाओं का गुलाम होता जा रहा है। ऐसे समय में लखनऊ से उठी एक कोशिश ने यह याद दिलाया कि फिल्में सिर्फ मनोरंजन नहीं होतीं वह समाज का दर्पण भी होती हैं।

4पीएम मीडिया संस्थान जिसने सीमित संसाधनों, सीमित बजट और असीम विश्वास के साथ वेब पत्रकारिता में अपनी बादशाहत कायम की है आज उसी भरोसे को सिनेमा की भाषा में आगे बढ़ाने जा रहा है। जी हां संपादक संजय शर्मा ने 4PM Films के बैनर तले अपनी पहली शार्ट फिल्म इश्तियाक को पेश किया है। फिल्म उस सोच की शुरुआत है जो मानती है कि कहानियां चिल्ला कर नहीं बल्कि धीरे-धीरे दिल में उतर कर असर करती हैं। इश्तियाक एक ऐसी फिल्म जो उस सवाल को उठाती है जिसे समाज अक्सर अनसुना कर देता है कि आखिर मर्द क्यों रोता है।

सिनेमा से मोहब्बत का

कुछ फिल्में परदे पर उतरती हैं और कुछ फिल्में जमीन से उगती हैं। इश्तियाक उसी दूसरी किस्म की फिल्म है जो एसी कमरों में नहीं, बल्कि पसीने, धैर्य और जिद से बनी है। यह फिल्म न तो किसी बड़े बैनर की मेहरबानी है और न किसी स्टारडम का शोर यह कहानी कहने की जिद है और सिनेमा से बेइंतिहा मोहब्बत का नतीजा।

"इश्तियाक इसी गुनाह पर सवाल उठाती है। यह फिल्म न तो उपदेश देती है न ही किसी को कटघरे में खड़ा करती है।"

नीयत साफ तो साधन मायने नहीं रखते

4PM Films की शुरुआत बताती है कि अगर नीयत साफ हो तो साधन मायने नहीं रखते। इश्तियाकसिर्फ एक शार्ट फिल्म नहीं यह उस सिनेमा की वापसी है जो इंसान से डरता नहीं उसे समझने की कोशिश करता है। यह शुरुआत है और अगर पहली ही दस्तक इतनी सधी हुई है तो आगे आने वाली कहानियां और भी गहरे सवाल लेकर आएंगी।

संवेदना का निचोड़ है फिल्म

4PM Films के पीछे खड़ा नाम है संजय शर्मा। एक ऐसा पत्रकार जिसने खबरों की भीड़ में भी हमेशा इंसान को खोजा। अब वही इंसान कैमरे के जरिये वह सवाल पूछ रहा है जिससे समाज अक्सर मुह फेर लेता है। संजय शर्मा के लिए इश्तियाक कोई प्रयोग नहीं है बल्कि यह उन वर्षों की संवेदना का निचोड़ है जो उन्होंने समाज को करीब से देखते हुए अर्जित की।

उपदेश नहीं हकीकत का आईना

समाज ने मर्द को हमेशा मजबूत देखा लेकिन कभी कमजोर होने की इजाजत नहीं दी। रोना मर्द के हिस्से में गुनाह बना दिया गया। इश्तियाक इसी गुनाह पर सवाल उठाती है। यह फिल्म न तो उपदेश देती है न ही किसी को कटघरे में खड़ा करती है। यह बस एक आईना रखती है ऐसा आईना जिसमें हर दर्शक खुद को देख सकता है। बेहतरीन लोकेशन, सटीक संवाद, संयमित अभिनय और संवेदनशील फिल्मांकन इश्तियाक़ को भीड़ से अलग खड़ा करता है। यह फ़िल्म बताती है कि जब विषय सच्चा हो तो भव्यता नहीं ईमानदारी ही सबसे बड़ी तकनीक होती है।

बेटी वन्या के जन्म दिन पर तोहफा

4PM Films के संस्थापक और 4पीएम न्यूज नेटवर्क के संपादक संजय शर्मा ने इस 4PM Films की शुरूआत अपनी बेटी वन्या के जन्मदिन से की है। चैनल और फिल्म लांच के अवसर पर उन्होंने अपने दिल की बात करते हुए कहा कि एक सपना, जो बहुत समय से दिल में था। एक कोशिश जो सिर्फ मनोरंजन नहीं संवेदना और सवाल लेकर आ रही है। उसे आज पूरा करने का मौका मिला। उन्होंने कहा कि हमने 4PM Films के नाम से एक नया चैनल इस इरादे से शुरू किया है कि यहां ऐसी कहानियां कहेंगे जो शोर नहीं करेंगी बल्कि चुपचाप दिल तक पहुंचेंगी। उनके मुताबिक इश्तियाक पहली पेशकश है एक नाजुक सवाल के साथ कि मर्द क्यों रोता है। यह फिल्म चीखेगी नहीं आरोप नहीं लगाएगी बस आपको अपने भीतर झांकने पर मजबूर करेगी। उन्होंने कहा कि दर्शकों की राय मेरे लिए सबसे बड़ी पूंजी है। इसलिए आप सभी लोगों से निवेदन है कि अपनी राय चैनल के माध्यम से जरूर रखें और आप का भरोसा ही मेरी ताक़त है।

इश्तियाक ने रखी गहरी बात

फिल्म समीक्षकों का मानना है कि इश्तियाक उस विरले वर्ग की फिल्म है जो कम समय में गहरी बात कह जाती है। एक वरिष्ठ फिल्म समीक्षक ने कहा कि यह फिल्म दिखाती है कि मर्दानगी का मतलब पत्थर होना नहीं है। इश्तियाक बिना किसी नाटकीयता के भावनाओं को छूती है। यह शार्ट फिल्म नहीं खामोशी के साथ एक लंबी बातचीत है। रिलीज के कुछ ही घंटों में दर्शकों की प्रतिक्रियाएं साफ इशारा कर रही हैं कि इश्तियाक ने दिलों को छुआ है। चैनल के कमेंट बाक्स मे एक दर्शक ने लिखा कि बहुत समय बाद कुछ ऐसा देखा जो बोलने पर मजबूर नहीं करता सोचने पर मजबूर करता है। यह फिल्म नहीं एक एहसास है। एक अन्य दर्शक ने लिखा कि हर मर्द को यह फिल्म देखनी चाहिए।

रचा जा सकता है प्रभावशाली सिनेमा

शॉर्ट फिल्म इश्तियाक के लेखक व निर्देशक प्रांशु श्रीवास्तव है। स्क्रीनप्ले व संवाद भी प्रांशु श्रीवास्तव का है फिल्म का प्रोडक्शन हाउस पन्ना पिक्चर है और प्रोड्यूसर संजय शर्मा है। फिल्म में मुख्य कलाकार इश्तियाक खान, डॉ. राकेश सोनी, सुषमा मिश्रा, अमित मिश्रा, गुड़िया, संजू आथिया है जबकि अन्य कलाकार प्रवीण खेमिया, आदित्य निर्मलकर, दीपक राय, सिया चौबे, हरि, प्रिया, नीलेश दुबे, राम दुबे, शुभम सरन हैं। यह फिल्म एक सशक्त रचनात्मक टीम का परिणाम है, जहाँ लेखन से लेकर अभिनय तक हर स्तर पर संवेदनशीलता को प्राथमिकता दी गई है। निर्देशक-लेखक प्रांशु श्रीवास्तव की कलम और दृष्टि ने कहानी को सादगी और गहराई दी है, वहीं कलाकारों ने बिना अतिरिक्त नाटकीयता के भावनाओं को जीवंत किया है।

भाजपा सरकार लापरवाह और संवेदनहीन : अखिलेश

शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद को स्नान से रोकने और समर्थकों से हाथापाई पर बरसे सपा मुखिया

» सपा प्रमुख बोले- पूरे मामले की जांच हो

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। प्रयागराज माघ मेले में शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद को स्नान से रोकने और समर्थकों से हाथापाई पर सियासी बवाल जारी है। इस घटना के बाद से राजनीतिक तूफान खड़ा हो गया है, जिसमें समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने बीजेपी सरकार पर तीखा हमला किया है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने इस घटना की निंदा करते हुए इसे बीजेपी सरकार का अक्षम्य दुर्व्यवहार बताया और जांच की मांग की है।

सपा प्रमुख ने पूरे मामले की जांच की मांग की और कहा कि भाजपा सरकार लापरवाह और संवेदनहीन है। मौनी अमावस्या के मौके पर प्रयागराज माघ मेले में शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद के शिष्यों और उत्तर प्रदेश की होम सेक्रेटरी मोहिता गुप्ता के साथ पुलिसकर्मियों के बीच तीखी बहस के बाद तनाव बढ़ गया। स्थिति जल्द ही हाथापाई में बदल गई, जिससे मेले वाली जगह पर अफरा-तफरी मच गई।

घटना के बाद, शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद ने मौनी अमावस्या स्नान करने से मना कर दिया और अपनी पालकी के साथ बीच रास्ते से ही अपने अखाड़े लौट गए। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने प्रयागराज में माघ मेला में शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद को पुलिस द्वारा संगम में स्नान करने से कथित तौर पर रोकने और उनके कुछ समर्थकों की पिटाई की घटना की निंदा करते हुए पूरे मामले की जांच की मांग की। यादव ने यहां एक बयान में कहा कि प्रयागराज में माघमेला क्षेत्र में पिछले साल की तरह ही इस साल फिर से साधु-संतों-भक्तों के साथ हुआ दुर्व्यवहार अक्षम्य है।

ऐसी घटनाएं भाजपा की सरकार में ही क्यों हो रही हैं

अखिलेश यादव ने कहा, यह घोर निन्दनीय है। सदियों से चली आ रही शाही-स्नान की अखंड सनातनी परंपरा में गत वर्ष भी इसी सरकार द्वारा विघ्न डाला गया था। यादव ने कहा कि प्रश्न ये है कि ऐसी घटनाएं भाजपा की सरकार में ही क्यों हो रही हैं। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, मौनी अमावस्या का शाही-स्नान क्या पहली बार हो रहा है। इस अवस्था के लिए भाजपा का कुशासन और नाकाम व्यवस्था ही दोषी है।

अपने दोष अब 'एआई' पर मढ़ेंगे

उन्होंने वाराणसी में मणिकर्णिका घाट पर हो रहे सौंदर्यीकरण कार्य पर सवाल उठाने के लिए विपक्ष की आलोचना को लेकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर निशाना साधते हुए कहा, अहंकारी भाजपा शासन और प्रशासन अपने से बड़ा किसी को नहीं मानता है। अब क्या इसका दोष भी 'एआई' पर मढ़ेंगे आदित्यनाथ ने आरोप लगाया था कि विपक्ष मणिकर्णिका घाट पर हो रहे मरम्मत कार्य को गलत तरीके से पेश करने के लिए कृत्रिम मेधा (एआई) से बनाई गई तस्वीरों का इस्तेमाल कर रहा है।

बिना किसी अनुमति के 200-250 समर्थकों के साथ अवरोधक तोड़ा : एसपी माघ मेला

पुलिस अधीक्षक (माघ मेला) नीरज पांडेय ने बताया कि स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने बिना किसी अनुमति के 200-250 समर्थकों के साथ पुल नंबर दो का अवरोधक तोड़कर स्नान घाट की तरफ प्रवेश किया। पांडेय के मुताबिक, उन्हें बताया गया था कि श्रद्धालुओं की खासी भीड़ है, इसके बावजूद वह नहीं माने और रोकने पर वह स्नान किए बगैर वापस चले गए।

जानबूझकर स्नान करने से रोका गया : शैलेंद्र योगीराज

वहीं, शंकराचार्य के मीडिया प्रभारी शैलेंद्र योगीराज ने इस घटना की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिषपीठाधीश्वर स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी महाराज को प्रशासन ने जानबूझकर स्नान करने से रोका तथा यह घटना पूरी तरह से सुनियोजित थी। योगीराज ने दावा किया, शंकराचार्य के समर्थक शांतिपूर्ण ढंग से संगम नोज की तरफ स्नान के लिए जा रहे थे, लेकिन षड्यंत्र के तहत प्रशासन के लोगों ने समर्थकों को धक्का दिया और संतों को बर्बरतापूर्वक पीटा।

भाजपा की सरकार में जितने पौराणिक मंदिर तोड़े गए हैं, उतना धरती पर किसी राजा ने नहीं तोड़े

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा की सरकार में जितने पौराणिक मंदिर तोड़े गए हैं, उतना धरती पर किसी राजा ने नहीं तोड़े हैं। उन्होंने कहा, मैं सैफई (इटावा) में एक मंदिर बनवा रहा हूं, भाजपा के लोग उसमें भी अड़ंगा लगा रहे हैं। अखिलेश ने कहा कि हेल्दी इंडिया स्लोगन नहीं मिशन होना चाहिए। हम चाहते हैं कि गरीब का इलाज फ्री हो। समाजवादी सरकार में गरीब को कार्ड नहीं दिखाना पड़ता था। अस्पतालों में फ्री इलाज होता था। अगर विकसित भारत का नारा दे रहे हैं, अमृत काल चल रहा है और कोई कार्ड की वजह से वापस हो जाए, उसका इलाज न हो पाए तो यह ठीक नहीं है।

भाजपा के लोग ना राम के हैं और ना ही शिव के : अजय राय

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष बोले- बनारस को ठगने आए हैं गुजराती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि गुजराती बनारस को ठगने आए हैं। बनारस की जनता अब और शोषण बर्दाश्त नहीं करेगी। उन्होंने सवाल उठाया कि अगर मूर्ति तोड़ी नहीं गई थी तो उसे दिखाने में हर्ज क्या था? उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री को मणिकर्णिका घाट जाना था लेकिन जब उन्हें पता चला कि वहां गड़बड़ी हो चुकी है तो लौट गए।

प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार हिंदुत्व की विरोधी है अब वह हिंदू देवी-देवताओं का अपमान करने पर आमादा है। भाजपा का दंभ ही उसके लिए काल बनेगा। भाजपा को माता अहिल्याबाई होलकर की मूर्ति तोड़ने का पाप लगेगा। भाजपा के लोग ना राम के हैं और ना ही शिव के। वे व्यापारी हैं और जहां उन्हें मुनाफा दिखता है इस दिशा में काम करते हैं।

शंकराचार्य के अपमान के लिए क्षमा मांगे सरकार

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने कहा है कि माघ मेला में शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वानंद के अपमान के लिए प्रदेश सरकार क्षमा मांगे। प्रदेश अध्यक्ष ने शंकराचार्य के काफिले को रोके जाने की घटना निंदनीय बताया है। माघ मेला में अपने शिविर के सामने धरने पर बैठे शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद से प्रदेश अध्यक्ष ने फोन पर बात की और पूरे घटनाक्र म के बारे में जानकारी ली। उन्होंने इस पूरे मामले की उच्च स्तरीय जांच की मांग की। शंकराचार्य के धरने पर बैठने की सूचना मिलते ही प्रदेश कांग्रेस के महासचिव मुकुंद तिवारी और विवेकानंद पाठक भी बड़ी संख्या में कांग्रेसियों के साथ मौके पर पहुंचे।

हिमंत शर्मा प्रदेश के 'सबसे बेईमान' मुख्यमंत्री : गोगोई

» असम विधानसभा चुनाव में एआईयूडीएफ के साथ कोई चुनावी गठबंधन नहीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गुवाहाटी। कांग्रेस की असम इकाई के अध्यक्ष गौरव गोगोई ने कहा कि पार्टी राज्य में आगामी विधानसभा चुनावों के लिए बदरुद्दीन अजमल के नेतृत्व वाले एआईयूडीएफ के साथ कोई चुनावी गठबंधन नहीं करेगी।

गोगोई ने हाजो-सुआलकुची निर्वाचन क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर सभाओं को संबोधित करते हुए कहा, पिछले लोकसभा चुनाव में एआईयूडीएफ की पूर्ण विफलता के बाद 2026 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस के साथ गठबंधन कर चुनावी बाधा को पार करने की उसकी (एआईयूडीएफ की) सोच पूरी तरह गलत और भ्रमपूर्ण है। कांग्रेस 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए किए गए गठबंधन की तर्ज पर कई अन्य विपक्षी दलों के साथ गठबंधन बनाने पर काम कर रही है और इससे एआईयूडीएफ को बाहर रखा गया है। उन्होंने 'बोर (ग्रेटर) असम' के निर्माण के लिए जनता से समर्थन की अपील की और मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा को राज्य का 'सबसे बेईमान' मुख्यमंत्री करार दिया। गोगोई ने दावा किया कि राज्य के छह समुदायों को अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने जैसे वादे पूरे न करना 'यह साबित करता है कि शर्मा एक बेईमान' मुख्यमंत्री हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि शर्मा ने अपनी पत्नी एवं बेटे के नाम पर अपार संपत्ति जमा कर रखी है। कांग्रेस नेता ने कहा कि उनकी पार्टी के सत्ता में आने पर उनकी (शर्मा की) सभी अवैध रूप से अर्जित संपत्तियों को जब्त कर ली जाएंगी। उन्होंने भाजपा पर धर्म, भाषा, जातीयता और समुदाय के नाम पर समाज में विभाजन पैदा करने का आरोप लगाया।

गोगोई ने जोर देकर कहा कि ऐसी विभाजनकारी राजनीति केवल व्यक्तिगत हितों की पूर्ति करती है, विकास की नहीं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस 'शांति एवं सद्भाव का पुनर्निर्माण करेगी और गरीबों की सेवा उसी तरह करेगी जैसे पूर्व मुख्यमंत्री तरुण गोगोई ने की थी। राज्य इकाई के पूर्व अध्यक्ष भूपेन कुमार बोरा ने भी सत्ताधारी पार्टी पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि भाजपा उन वादों को पूरा करने में 'विफल' रही, जिनके आधार पर वह सत्ता में आई थी।

अपर्णा से तलाक लेंगे प्रतीक सोशल मीडिया पर डाला पोस्ट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा मुखिया अखिलेश यादव के भाई प्रतीक यादव ने अपनी पत्नी एवं भाजपा नेत्री अपर्णा यादव से तलाक लेने का एलान किया है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफार्म इंस्टाग्राम पर पोस्ट करके यह बात सार्वजनिक की।

इंस्टाग्राम अकाउंट से की गई पोस्ट पर लिखा गया कि मैं अपर्णा को जल्द से जल्द तलाक देने जा रहा हूं। उन्होंने मेरे परिवार के रिश्ते खराब कर दिए। बस मशहूर और असरदार बनना चाहती हैं। अभी, मेरी मेंटल हेल्थ बहुत खराब है। लेकिन, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि उन्हें सिर्फ़ अपनी ही चिंता है। मैं बदकिस्मत था कि मेरी शादी उनसे हुई। हालांकि प्रतीक यादव या फिर अपर्णा यादव के परिजनों ने अभी इस बात की पुष्टि नहीं की है। उनका कहना है कि अपर्णा अभी बाहर हैं। हो सकता है किसी ने सोशल मीडिया अकाउंट हैक कर लिया हो।

उत्तर भारत की महिलाओं पर विवादित टिप्पणी से बिहार में बवाल

डीएमके और भाजपा पर कोर्ट का कोड़ा

तमिलनाडु व उत्तराखंड में दिये गए अभद्र बयान

» डीएमके सांसद दयानिधि मारन के खिलाफ कोर्ट में मामला दर्ज

» भाजपा मंत्री के पति गिरधारी लाल साहू को नोटिस जारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार में आज कल तमिलनाडु व उत्तराखंड छाया है। दोनों राज्यों के वहां की लड़कियों व महिलाओं पर दि गए बयान पर सड़क से लेकर कोर्ट तक कोहराम मच गया है। जहां डीएमके सांसद दयानिधि मारन ने उत्तर भारत की महिलाओं को केवल घर और बच्चों के लिए बताया और दक्षिण की महिलाओं को श्रेष्ठ बताया। उनके इस बयान के खिलाफ अधिवक्ता सुधीर कुमार ओझा ने मुजफ्फरपुर कोर्ट में परिवाद दायर किया।

वहीं बिहार की लड़कियों को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी के मामले में मुजफ्फरपुर की एक अदालत ने उत्तराखंड की भाजपा मंत्री रेखा आर्या के पति गिरधारी लाल साहू के खिलाफ नोटिस जारी किया है। यह नोटिस अदालत में दायर परिवाद पर सुनवाई के बाद जारी किया गया है। अधिवक्ता ओझा ने बताया कि उनके खिलाफ मामला भारतीय दंड संहिता की धारा 74, 75/79, 192, 251(बी), 298 और 352 के तहत दर्ज किया गया है। कोर्ट ने इस परिवाद को स्वीकार करते हुए 22 जनवरी को सुनवाई की तिथि मुकर्रर की है।

मुजफ्फरपुर की कोर्ट में डीएमके के सांसद पर परिवाद

बिहार के मुजफ्फरपुर की कोर्ट में डीएमके के सांसद दयानिधि मारन के खिलाफ परिवाद दायर किया गया है। मामला उस विवादित बयान से जुड़ा है, जिसमें दयानिधि मारन ने उत्तर भारत की महिलाओं की तुलना दक्षिण भारत की महिलाओं से की थी। चेन्नई सेंट्रल सीट से चार बार सांसद रह चुके दयानिधि मारन ने अपने बयान में कहा था कि उत्तर भारत की महिलाएं मुख्य रूप से घर का काम और बच्चों की देखभाल करने के लिए हैं, जबकि तमिलनाडु की महिलाएं पढ़ाई-लिखाई और कामकाजी हैं। उन्होंने यह भी कहा कि दक्षिण भारत की लड़कियां सर्वगुण सम्पन्ना और हर काम में सक्षम हैं।

वायरल वीडियो के बाद दर्ज हुआ परिवाद

बीते दिनों गिरधारी लाल साहू का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। उसमें वह युवाओं से बातचीत के दौरान कथित तौर पर यह कहते दिखे कि यदि वे शादी करने में असमर्थ हैं तो उनके लिए बिहार से लड़की लाई जाएगी और बिहार की लड़कियां 20 से 25 हजार रुपये में शादी के लिए उपलब्ध हैं। इस बयान को लेकर व्यापक विरोध हुआ था।

उत्तर भारत की महिलाओं को नीचा दिखाने की कोशिश

इस बयान को लेकर अधिवक्ता सुधीर कुमार ओझा ने मुजफ्फरपुर कोर्ट में दयानिधि मारन के खिलाफ परिवाद दायर किया है। परिवाद में आरोप लगाया गया है कि सांसद का यह बयान उत्तर भारत की महिलाओं को नीचा दिखाने और दक्षिण भारत की महिलाओं को श्रेष्ठ दिखाने की मंशा से दिया गया था।

कोर्ट ने जारी किया नोटिस, अधिवक्ता ने जताई सम्मान को ठेस पहुंचने की बात

इस मामले को लेकर अधिवक्ता सुधीर कुमार ओझा ने मुजफ्फरपुर की अदालत में परिवाद दायर किया था। परिवाद में कहा गया कि इस तरह की टिप्पणी से बिहार की लड़कियों और समाज के सम्मान को ठेस पहुंची है। मामले की सुनवाई के लिए पहले 13 जनवरी की तिथि निर्धारित की गई थी। सोमवार को हुई सुनवाई के दौरान अदालत ने मामले का संज्ञान लेते हुए गिरधारी लाल साहू के खिलाफ नोटिस जारी किया और उनसे जवाब मांगा है। कोर्ट ने मामले में अगली सुनवाई की तिथि 26 फरवरी 2026 निर्धारित की है।

भाजपा मंत्री के पति को कोर्ट का नोटिस, 26 फरवरी को अगली सुनवाई

बिहार की लड़कियों पर आपत्तिजनक टिप्पणी के मामले में मुजफ्फरपुर कोर्ट ने भाजपा मंत्री के पति गिरधारी लाल साहू को नोटिस जारी किया है। वायरल वीडियो के बाद दर्ज परिवाद पर अगली सुनवाई 26 फरवरी 2026 को होगी।

प्रथम दृष्टया मामले को गंभीर माना : ओझा

परिवादी सह अधिवक्ता सुधीर कुमार ओझा ने बताया कि अदालत ने प्रथम दृष्टया मामले को गंभीर मानते हुए नोटिस जारी किया है। अब गिरधारी लाल साहू को अदालत में अपना पक्ष रखना होगा, जिसके बाद आगे की कानूनी प्रक्रिया तय होगी।

हरियाणा : बीजेपी में फिर बाहर आया मनमुटाव

कैबिनेट मंत्री राव नरबीर का मंत्री राव इंद्रजीत पर हमला

» राज्य के मंत्री व केंद्र के मंत्री में तनाव

» बोले- पार्टी ने उन्हें बहुत कुछ दिया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

हरियाणा। हरियाणा में दूसरी बार फिर सता में आई भाजपा में रह-रह कर समय-समय पर गुटबाजी बाहर आ जाती है। कभी विज की नाराजगी की खबरें आती हैं तो कभी खट्टर की। अब ताजा मामला प्रदेश की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव के 'वजूद खत्म होने' वाले बयान पर गरमाया है।

हालांकि पर राव नरबीर ने कहा कि उनका भी वजूद है, वह यह नहीं कह रहे कि किसी का वजूद नहीं है, लेकिन सारा वजूद किसी एक व्यक्ति का नहीं होता। हरियाणा के कैबिनेट मंत्री राव नरबीर सिंह ने केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह पर एक बार फिर निशाना साधते हुए कहा कि देश में शायद यह इकलौता मामला है, जहां पिता केंद्र में मंत्री हों और बेटी प्रदेश में मंत्री हो। उन्होंने कहा कि भाजपा ने राव इंद्रजीत सिंह को बहुत कुछ दिया है, अब उनकी कौन-सी इच्छा अधूरी रह गई, यह उन्हें खुद नहीं पता।

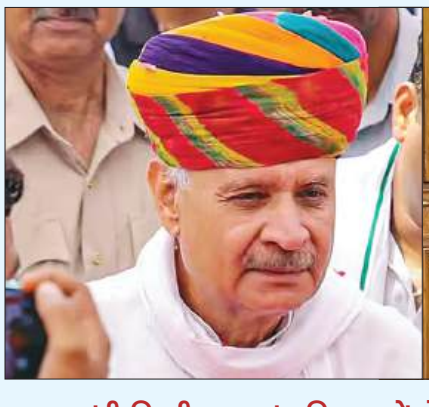

मुख्यमंत्री किसी चार-पांच विधायकों से नहीं बनता : राव नरबीर

गांव पाहलावास में एक निजी कार्यक्रम में शिरकत के दौरान राव नरबीर ने कहा कि मुख्यमंत्री किसी चार-पांच विधायकों से नहीं बनता, बल्कि पार्टी के सामूहिक और सर्वोच्च फैसले से बनता है। केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह द्वारा अहीरवाल क्षेत्र के साथ भेदभाव वाले बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने कहा कि एक व्यक्ति के कहने से वोट नहीं मिलते। अहीरवाल की जनता ने भाजपा की नीतियों पर भरोसा जताया, इसी कारण पार्टी लगातार तीसरी बार सत्ता में आई है।

सारा वजूद किसी एक व्यक्ति का नहीं होता

प्रदेश की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव के 'वजूद खत्म होने' वाले बयान पर राव नरबीर ने कहा कि उनका भी वजूद है, वह यह नहीं कह रहे कि किसी का वजूद नहीं है, लेकिन सारा वजूद किसी एक व्यक्ति का नहीं होता। भाजपा की नीतियों के दम पर ही सरकार बनी है। वहीं, पार्टी में 'छेद करने' के आरोपों पर उन्होंने स्पष्ट किया कि वह कोई छेद नहीं कर रहे, बल्कि पार्टी की रीति-नीति के अनुसार ही कार्य कर रहे हैं। आगामी बजट को लेकर राव नरबीर ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सैनी आम जनता से फीडबैक ले रहे हैं और इस बार बजट आम आदमी का होगा। उन्होंने कांग्रेस शासन पर पर्ची-खर्ची का आरोप लगाते हुए कहा कि अब योग्यता के आधार पर नौकरियां मिल रही हैं। योग्यता प्रणाली लागू होने से अहीरवाल के युवाओं को पहले से अधिक रोजगार मिला है।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

किताबें अब भी मानव की सबसे सच्चे साथी

इंटरनेट, सोशल मीडिया एवं अन्य इलेक्ट्रोनिक माध्यमों पर अपार पाठ्य सामग्री एवं साहित्य उपलब्ध होने के बावजूद पुस्तक मेलों में इतनी भीड़ क्यों आ रही है? छपी हुई पुस्तकें एवं शब्द केवल ज्ञान, जिज्ञासा और मनोरंजन की विशाल दुनिया के दरवाजे नहीं खोलते, वे हमें गंध, स्पर्श, संवेदना, सोच, अनुभूति की प्रेरक, अनुकरणीय एवं रोमांचक दुनिया में भी ले जाते हैं।

इस महीने कई साहित्यकारों के निधन से जहां किताबों को पढ़ने वालों को निराशा हुई वहीं एक सुखद समाचार भी छाया। भारत मंडपम् में नौ दिनों के किताबों के जमावड़े ने एक बात स्पष्ट कर दी है कि किताबों से नाता कभी नहीं टूट पायेगा। इसमें लोगों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। आज भी हम कह सकते हैं कि किताबें ही मनुष्य की सच्चे साथी हैं। मेले में 35 से अधिक देशों के एक हजार से अधिक प्रकाशक भाग ले रहे हैं। यह भव्य विश्व पुस्तक मेला केवल पुस्तकों की खरीद-फरोख्त का आयोजन नहीं है, बल्कि यह उस जीवंत पुस्तक-संस्कृति का उत्सव है, जिसे अनेक लोग डिजिटल युग में कमजोर मानने लगे थे। एक-एक किलोमीटर लंबी कतारें, बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक की उत्सुक भागीदारी और पुस्तकों के प्रति बढ़ता आकर्षण इस धारणा को स्वस्थ करता है कि पुस्तकें जीवन का अभिन्न हिस्सा रही हैं और भविष्य में भी रहेंगी। इंटरनेट, सोशल मीडिया एवं अन्य इलेक्ट्रोनिक माध्यमों पर अपार पाठ्य सामग्री एवं साहित्य उपलब्ध होने के बावजूद पुस्तक मेलों में इतनी भीड़ क्यों आ रही है? छपी हुई पुस्तकें एवं शब्द केवल ज्ञान, जिज्ञासा और मनोरंजन की विशाल दुनिया के दरवाजे नहीं खोलते, वे हमें गंध, स्पर्श, संवेदना, सोच, अनुभूति की प्रेरक, अनुकरणीय एवं रोमांचक दुनिया में भी ले जाते हैं।

इस वर्ष के पुस्तक मेले के दृश्य पुस्तक-संस्कृति के प्रति नई आशा, नया विश्वास और नया उत्साह पैदा करते हैं। यह मेला स्पष्ट संकेत देता है कि पढ़ने की प्रवृत्ति केवल जीवित ही नहीं है, बल्कि नए पंखों के साथ उड़ान भर रही है। पुस्तक मेला वस्तुत: एक विश्व उत्सव है-ऐसा उत्सव जो ज्ञान, विचार, कल्पना और संवाद को एक साझा मंच देता है। दुनिया भर में पुस्तकों के दायरे को पहचानने, उन्हें प्रोत्साहित करने और संस्कृतियों को जोड़ने के लिए यह आयोजन अतीत और भविष्य के बीच एक मजबूत कड़ी तथा पीढ़ियों और सभ्यताओं के बीच एक सेतु का कार्य करता है। यही कारण है कि यूनेस्को हर वर्ष पुस्तक उद्योग के तीन प्रमुख क्षेत्रों- प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता और पुस्तकालयों के अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ मिलकर विश्व पुस्तक राजधानी का चयन करता है, ताकि पुस्तक-संस्कृति की प्रेरणा पूरे वर्ष बनी रहे। यह पहल इस बात का प्रमाण है कि पुस्तकें केवल ज्ञान का माध्यम नहीं, बल्कि वैश्विक संवाद और मानवीय एकता का भी आधार हैं। किताबें अपने सभी रूपों में-मुद्रित, ई-बुक, ऑडियो हमें सीखने, सोचने और स्वयं को सशक्त बनाने का अवसर देती हैं। वे हमारा मनोरंजन करती हैं, हमें दुनिया को समझने में मदद करती हैं और दूसरों की दुनिया में झांकने का अवसर देती हैं। इस साल का मेला 'भारतीय सैन्य इतिहास वीरता और ज्ञान/75' थीम पर आधारित है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

दक्षिण में चुनावी बयार और भाषा की राजनीति

प्रमोद जोशी

तमिलनाडु में इन दिनों दो फिल्में चर्चा का विषय हैं। एक है फिल्म अभिनेता से राजनेता बने विजय की 'जन नायकन' और दूसरी शिवकार्तिकेयन की 'पराशक्ति।' दक्षिण भारतीय फिल्मों के सुपरस्टार विजय ने करीब डेढ़ साल पहले 'तमिषगा वेत्री कषगम' (टीवीके) नाम से पार्टी बनाकर राजनीति में प्रवेश किया है। दूसरी तरफ 'पराशक्ति' अपनी एंटी-हिंदी थीम के कारण चर्चित है। दोनों को फिल्म सेंसर बोर्ड की कुछ आपत्तियों का सामना करना पड़ा है। इस वजह से 'जन नायकन' रिलीज़ नहीं हो पाई, जबकि 'पराशक्ति' करीब बीस बदलाव करके रिलीज हो गई है। तमिल राजनीति में दोनों फिल्मों के गहरे निहितार्थ हैं। हालांकि, विजय पेरियार के रास्ते पर चलने का दावा करते हैं और राज्य की द्रविड़ पार्टियों की भाषा नीति के पक्षधर हैं, पर वे सत्तारूढ़ डीएमके के सामने चुनौती के रूप में उभर कर आना चाहते हैं। उनकी फिल्म की थीम जनता के बीच से उभर कर आए ऐसे ही नेता पर केंद्रित है।

इसमें जनता के नायक की अवधारणा, विजय के किरदार के इर्द-गिर्द घूमती है। तमिलनाडु की राजनीति में सिनेमा के कलाकारों का बोलबाला पचास के दशक से ही शुरू हो गया था। वहां की 'कटआउट' संस्कृति में 'आसमानी कद' के राजनेता सिनेमा के पर्दे से आए। तमिलनाडु शायद अकेला ऐसा राज्य है, जहां लगातार पांच मुख्यमंत्री सिनेमा जगत से आए। केवल कलाकारों की बात ही नहीं है, वहां की फिल्मों की स्क्रिप्ट में द्रविड़ विचारधारा को डालने का काम भी किया। 1952 की फिल्म 'पराशक्ति' ने द्रविड़ राजनीतिक संदेश जनता तक पहुंचाया था। इस फिल्म का स्क्रीनप्ले और संवाद के. करुणानिधि ने लिखे थे, जो बाद में राज्य के मुख्यमंत्री बने। उनके पहले सीएन अन्नादुरै ने भी कई फिल्मों की पटकथाएं लिखीं। जैमिनी गणेशन, एमजी रामचंद्र, जयललिता और अब विजय और कमलहासन परोक्ष या प्रत्यक्ष राजनीति में हस्तक्षेप कर रहे हैं। रजनीकांत ने भी कुछ समय पहले कदम बढ़ाए थे, जो बाद में खींच लिए।

अब जो 'पराशक्ति' रिलीज हुई है, वह 1952 वाली फिल्म का रीमेक नहीं है। इसके साथ कथित 'हिंदी-साम्राज्यवाद' के विरोध का राजनीतिक संदेश जुड़ा है। पुरानी 'पराशक्ति' जाति और सामाजिक न्याय से जुड़े मसलों पर केंद्रित थी, जबकि नई 'पराशक्ति' साठ के दशक के हिंदी-विरोधी आंदोलन की पृष्ठभूमि पर आधारित है। 'जन नायकन'

जहां सिनेमा के सुपरस्टार विजय को राजनेता के रूप में स्थापित करना चाहती है, वहीं 'पराशक्ति' साठ के दशक में चले हिंदी-विरोधी आंदोलन की उस आधारभूत राजनीति को उभारना चाहती है, जिसके सहारे द्रविड़ राजनीति ने राज्य से कांग्रेस को बाहर किया था। यह फिल्म अनायास ही नहीं बना ली गई है। इसकी थीम और रिलीज के समय को काफी गहराई से सोच-विचारकर तैयार किया गया है। अगले तीन-चार महीनों में पांच राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव होने वाले हैं। इनमें असम और बंगाल के मसले दक्षिण के तमिलनाडु, पुदुच्चेरी और केरल के मसलों से अलग हैं, जहां क्षेत्रीयता और भाषा की पृष्ठभूमि पिछले डेढ़-दो साल से तैयार की जा रही है। इसमें अब कर्नाटक को भी जोड़ सकते हैं, जहां हिंदी-विरोध की हवा कुछ देर से पहुंची है। इस सिलसिले में सोशल मीडिया पर बड़े रोचक संवाद पढ़ने को मिल रहे हैं। नई 'पराशक्ति' को लेकर एक दर्शक ने सोशल मीडिया पर लिखा, मुझे यह फिल्म देखकर निराशा हुई, जिसमें एक उपराष्ट्रीयता को हथियार बनाकर राष्ट्रीय-एकता को निशाना बनाया गया है। इसके जवाब में फिल्म के एक समर्थक ने लिखा, हिंदी हमारे लिए विदेशी भाषा है। इसके जवाब में किसी ने लिखा, अंग्रेजी तो आपके घर में जन्मी है। एक और हैंडल में लिखा गया, कर्नाटक के लिए तेलुगु, तमिल, मलयालम विदेशी भाषाएं हैं। तेलुगु राज्यों के लिए कन्नड़, मलयालम, तमिल विदेशी भाषाएं हैं। तमिलनाडु के लिए तेलुगु, कन्नड़, मलयालम विदेशी भाषाएं हैं। पूरे दक्षिण को एक साथ क्लब करना बंद करो। कम से कम, तेलुगु राज्यों ने हिंदी का विरोध नहीं किया। हम हिंदी भी बोलते हैं। दक्षिण के ही एक यूजर ने लिखा, वे नहीं चाहते थे कि उनकी पहचान तमिल के रूप में हो। उन्होंने तमिलों को द्रविड़ियन कहा, जो बड़ी पहचान है, जिसमें तमिल, तेलुगु, कन्नडिगा और मलयाली शामिल हैं, ताकि वे इसमें फिट हो सकें।

एक यूजर ने लिखा, उत्तर भारत वाले मुगलों और अंग्रेजों के हमलों का विरोध करते हैं, उसी तरह हम हिंदी के हमले का विरोध करते हैं। इस पर एक पाठक ने लिखा, हिंदी भारतीय भाषा है, क्या भारत के लोग अपने ही देश पर हमला करते हैं? भाषा और राष्ट्रीय एकता को लेकर देश के भीतर बहस हो, इससे अच्छी बात क्या हो सकती है, पर सोशल मीडिया की बहसें 'मॉडरेटेड' नहीं होतीं। उनमें अक्सर भावनाओं का अतिरेक होता है।

मशाल बन सत्ता को संभालने का साहित्यिक दायित्व

विश्वनाथ सचदेव

आप किसी को अपने घर बुलायें, और फिर उससे पूछें कि वह आपकी बातों से बोर तो नहीं हो रहा तो आप उससे क्या अपेक्षा करेंगे? यही न कि या तो वह आपसे कहेगा, अरे नहीं, आप तो बहुत अच्छी बातें बता रहे हैं, या फिर बोर हो रहा होगा तो कह देगा अपने मन की बात। ऐसे में आपसे अपेक्षा यह होती है कि आप शालीनता के साथ अपनी बात कहने का ढंग बदल देंगे। लेकिन यदि आप ऐसा न करके अपने अतिथि को अपने घर से निकल जाने और फिर कभी न बुलाने की बात कहने लगें तो आपको असभ्य और बदतमीज ही तो कहा जायेगा। उस दिन छत्तीसगढ़ के संत घासीदास विश्वविद्यालय में ऐसा ही हुआ। विश्वविद्यालय ने केंद्रीय साहित्य अकादमी के आर्थिक सहयोग से हिंदी कहानी की दशा-दिशा पर एक कार्यक्रम आयोजित किया था। देश के बड़े-बड़े साहित्यकार वहां उपस्थित थे।

इनमें से एक मनोज रूपड़ा भी थे, जिनकी गणना हिंदी के श्रेष्ठ कहानीकारों में होती है। मेजबान कुलपति शायद स्वागत भाषण दे रहे थे। अचानक उन्होंने सामने बैठे अपने एक अतिथि, मनोज रूपड़ा से पूछ लिया वे उनकी बातों से ऊब तो नहीं रहे और मनोज रूपड़ा ने ईमानदारी से कह दिया, आप मुद्दे पर बोलें तो ज्यादा अच्छा रहेगा। कुलपति महोदय ने इसे अपना अपमान समझा और यह कहते हुए कि वरिष्ठ कहानीकार में वॉइस चांसलर से बात करने का विवेक नहीं है, उन्हें फटकारते हुए हाल से बाहर निकलने का आदेश दे दिया। रूपड़ा उठकर बाहर चले गये, पर यह प्रकरण देशभर में चर्चा का विषय बना हुआ है। सब तरफ कुलपति के 'असभ्य' व्यवहार की आलोचना हो रही है। जिसने भी वायरल वीडियो पर यह प्रकरण देखा-सुना है, वह हैरान ही हो सकता है कि कुलपति जैसे ऊंचे आसन पर बैठा व्यक्ति इतना अनुचित व्यवहार कैसे कर सकता है! उम्मीद यह की जा रही थी कि कार्यक्रम के मेजबान कुलपति अपनी गलती का अहसास करते हुए क्षमा मांग लेंगे, या कम से कम अपने व्यवहार पर खेद तो व्यक्त करेंगे ही। पर घटना के पांच-छह दिन गुजर जाने और देशभर में उनके व्यवहार की हो रही भर्त्सना के बावजूद उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया है!

इस दौरान साहित्य अकादमी ने एक अच्छा काम अवश्य किया है- अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने इस घटना पर खेद व्यक्त करते हुए घोषणा की है कि संत घासीदास विश्वविद्यालय को आगे से अकादमी किसी भी प्रकार की आर्थिक सहायता नहीं देगी और न ही विश्वविद्यालय के साथ मिलकर कोई कार्यक्रम करेगी। यह एक स्वागत-योग्य निर्णय है। खासकर ऐसी स्थिति में जबकि कुछ ही दिन पहले केंद्र सरकार द्वारा अकादमी के पुरस्कारों की घोषणा रोकने पर अकादमी की चुप्पी की आलोचना हो रही थी, साहित्य अकादमी का यह निर्णय कुछ दिलासा देने वाला है। बहरहाल, इसमें कोई संदेह नहीं कि विवादों में घिरे कुलपति ने सिर्फ एक साहित्यकार का नहीं, पूरे साहित्य-जगत का अपमान किया है। अपमान तो उन्होंने कुलपति के पद और अपने विश्वविद्यालय का भी किया है।

जिन शब्दों में, और जिस लहजे में, कुलपति महोदय ने एक साहित्यकार की भर्त्सना की थी, होना तो यह चाहिए था कि उससे वहां उपस्थित सारे साहित्यकार और बाकी श्रोता भी, स्वयं को अपमानित महसूस करते। कुछ लोग अवश्य तब उठकर हाल से बाहर चले गये थे, पर सवाल यह उठता है कि जो साहित्यकार नहीं गये, वे क्यों बैठे रहे? उन्हें क्यों नहीं लगा कि कुलपति महोदय ने एक रचनाकार का ही नहीं, सारे साहित्यकारों का अपमान किया है। आश्चर्य तो इस बात पर भी होना चाहिए कि घटना के बाद लोगों ने उस कार्यक्रम में बैठे रहना उचित समझा। बताया जा रहा है कि आयोजन में कई वरिष्ठ साहित्यकार भी उपस्थित थे। न उन्हें वहां बैठे रहना गलत लगा और न ही असभ्य व्यवहार करने वाले कुलपति के हाथों 'सम्मानित' होना! यही नहीं, घटना के इतने दिनों बाद भी, वहां बैठे रहे साहित्यकारों का कोई बयान सामने न आना भी एक रहस्यमयी चुप्पी ही लगता है। शायद रहस्यमयी नहीं है यह चुप्पी। वे चुप क्यों रहे, यह वही जानें, पर यह अपने आप में कोई रहस्य नहीं है कि सत्ता, चाहे वह राजनीतिक हो अथवा प्रशासनिक, अक्सर साहित्य को अपने अधीन रखना चाहती है। चाहती ही नहीं, अधीन मानती भी है। न वह इतिहास से कुछ सीखना चाहती है, न ही वर्तमान को समझना चाहती है। पता नहीं, कुर्सी पर बैठे लोगों को यह याद क्यों नहीं रहता कि कभी बुंदेलखंड के राजा छत्रसाल ने कवि भूषण की पालकी को कंधा देकर उनके प्रति अपना सम्मान प्रकट किया था।

इस इतिहास को कोई चाहे तो कल्पना भी कह सकता है, पर समझने की बात यह है कि राजा छत्रसाल और कवि भूषण का यह प्रकरण सत्ता और साहित्य के रिश्तों को परिभाषित करने वाला है। यहीं यह भी समझना जरूरी है कि किसी छत्रसाल (सत्ता) द्वारा सम्मानित होने के लिए भूषण (साहित्य) को अपनी पात्रता भी सिद्ध करनी होती है। संत घासीदास विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में कुलपति के द्वारा अनुचित व्यवहार के दौरान वहां उपस्थित साहित्यकारों की चुप्पी यही संकेत देती है कि या तो उन्होंने घटना में निहितार्थ को नहीं समझा या उनमें सत्ता के अनुचित घमंड का प्रतिकार करने का साहस नहीं था। ऐसे साहित्यकारों को अपने आप से यह सवाल पूछना चाहिए कि अनुचित का प्रतिकार करना उन्होंने जरूरी क्यों नहीं समझा।

तुलसी को ठंड से बचाने के लिए करें ये काम

सर्दियों का मौसम आते ही कई पौधे सूखने लगते हैं। खासकर घर में लगा तुलसी का पौधा सर्दियों में मुरझा जाता है। ठंडी हवाएं, कम रोशनी और अधिक नमी तुलसी के लिए सबसे बड़ी दुश्मन हैं। तुलसी एक औषधीय गुणों वाला पौधा है, जिसे गर्मी, धूप और सूखी मिट्टी पसंद होती है। सर्दियों में जरा-सी लापरवाही इसकी पत्तियों को पीला, काला बनाकर पौधे को सूखा सकती है। लेकिन कुछ आसान उपाय इसे पूरे मौसम हरा-भरा रख सकते हैं। पौधों की देखभाल करने वाले माली अच्छे से जानते हैं कि सर्दियों में भी तुलसी को हरा-भरा कैसे रखना है। हालांकि घर की तुलसी के पौधे की देखभाल के लिए माली नहीं रख सकते हैं तो खुद ही माली के सीक्रेट टिप्स को अपनाकर अपने पौधे को सर्दी से बचा सकते हैं।

कम पानी

सर्दियों में अधिक पानी जड़ें सड़ने का कारण बनता है। ऐसे में अगर मिट्टी सूखी दिखे तभी पानी दें। सर्दियों में पौधों को पानी देना का सबसे बेहतर समय सुबह का होता है। रात में पानी देने से ठंड पौधों की जड़ों को मार देती है। इसलिए पानी का ध्यान रखें। अगर आप रोज तुलसी में जल चढ़ाते हैं तो बहुत कम मात्रा में ही जल चढ़ाएं।

रोज धूप जरूरी

तुलसी को सीधी धूप सर्वाइवल देती है। गमले को बालकनी या धूप वाली खिड़की पर रखें। पौधे के लिए सुबह की धूप सबसे फायदेमंद होती है। तुलसी के पौधे के हराभरा बनाए रखने के लिए तुलसी के गमले में नीम का पानी डाल दें। नीम का पानी डालने से तुलसी की ग्रोथ अच्छी होती है। इससे पत्तियां सूखती नहीं है और तुलसी का पौधा एकदम हरा बना रहता है।

केमिकल खाद कम ऑर्गेनिक अधिक

कुछ लोग तुलसी के पौधे में गोबर की गीली खाद डाल देते हैं। इससे तुलसी का पौधा खराब हो सकता है। इसके अलावा सर्दियों में केमिकल खाद नुकसान करती है। हर 15 दिन में पौधे में गोबर खाद या वर्मी कम्पोस्ट की थोड़ी मात्रा मिलाएं। बहुत ज्यादा खाद डालने से भी पौधा जल जाता है। इसके अलावा किसी भी पौधे के लिए थोड़ी रेतीली मिट्टी अच्छी होती है। चिकनी मिट्टी पानी को सोखकर लंबे समय तक गीली रहती है। जिससे पौधा रखा हो जाता है। इसलिए मिट्टी में थोड़ा रेट मिक्स कर दें।

पौधे को करें प्रोटेक्ट

ठंडक में सर्द और तेज हवाएं पत्तियों को नुकसान पहुंचाती हैं। ओस गिरने से भी पौधा मर सकता है। इसलिए रात को तुलसी के पौधे को हल्का कवर करें ताकि गर्माहट बनी रहे। पौधे को कवर करने के लिए नेट शेड या प्लास्टिक शेट का उपयोग करें। पर हवा का थोड़ा वेंटिलेशन रखें।

घर के भीतर ज्यादा गर्म में न रखें

सर्दियों में पौधे को लोग घर के अंदर रख लेते हैं। लेकिन अंदर हीटर की गर्म हवा तुलसी को सुखा सकती है। तुलसी के लिए 15 डिग्री सेल्सियस से 25 डिग्री सेल्सियस तापमान आदर्श है। इसके अलावा अगर तुलसी का पौधा सूख रहा है तो एक बार उसकी मिट्टी चेक कर लें।

पत्तियों की समय-समय पर करें कटिंग

पुरानी पत्तियां पोषक तत्व खा लेती हैं। इसलिए समय समय पर पौधे के सिर्फ ऊपरी हिस्से को हल्का ट्रिम करें। इससे नई पत्तियां तेजी से उगेंगी। तुलसी के पौधे को बीच-बीच में कटाई करते रहें। इससे ग्रोथ अच्छी होती है। पौधे पर आई मंजरी को हटाते रहें।

हंसना मना है

मेवालाल ने चार लोगों को कार से दबा दिया, जज मेवालाल से-तुमने तो शराब पी नहीं थी तो फिर ऐसा क्यों किया? मेवालाल-जज साहब मेरे एयरटेल वालों ने कहा था कि इस गाने के लिए चार दबायें।

एक महिला मॉल से बिस्कुट चुराते हुए पकड़ी गई। जज ने कहा : तुमने जो बिस्कुट का पैकेट चुराया, उस में 10 बिस्कुट थे। इसलिए तुम्हे 10 दिन की जेल की सजा दी जाती है। तभी पति पीछे से चिल्लाया: जज साहब, इसने साबूदाने का पैकेट भी चुराया है।

मरीज को डॉक्टर आखिरकार समझा पाया कि ये ऑपरेशन कितना जरूरी है लेकिन .. जैसे ही उसने 8 लाख का खर्चा बताया मरीज ने फिर मना कर दिया। डॉक्टर बोला — तुम पहले 2 लाख जमा कर दो , बाकी 22 हजार हर महीने किस्तों में दे देना। मरीज बोला— ये तो ऐसे हो गया, जैसे मैं कोई कार ले रहा हूं। डॉक्टर बोला—कह तो सही रहे हो.. लेकिन कार तुम नहीं मैं ले रहा हूं।

1 मुर्गी ने बत्तख से शादी कर ली, मुर्गा: हम मर गये थे क्या? मुर्गी: मैं तो तुमसे ही शादी करना चाहती थी पर मॉम-डैड चाहते थे लड़का नेवी में हो।

कहानी — कौवा और दुष्ट सांप

एक जंगल में किसी पेड़ पर कौवे का एक जोड़ा रहा करता था। वो दोनों खुशी-खुशी उस पेड़ पर जीवन बसर कर रहे थे। एक दिन उनकी इस खुशी को एक सांप की नजर लग गई। क्योंकि उसी पेड़ के नीचे बने बिल में सांप रहने लगा था। जब भी कौवों का जोड़ा दाना चुगने के लिए जाता, सांप उनके अंडों को खा जाता था और जब वो वापस आते, तो उन्हें घोंसला खाली मिलता था, लेकिन उन्हें पता नहीं चल पा रहा था कि अंडे कौन ले जाता है। एक दिन कौवे का जोड़ा दाना चुग कर जल्दी आ गया, तो उन्होंने देखा की उनके अंडों को बिल में रहले वाला एक सांप खा रहा है। इसके बाद उन्होंने पेड़ पर किसी ऊंचे स्थान पर छुपकर अपना घोंसला बना लिया। सांप ने देखा कि कौवों का जोड़ा पहले वाले स्थान को छोड़कर चला गया है, लेकिन शाम होते ही दोनों वापस पेड़ पर आ जाते हैं। इस प्रकार कई दिन निकल गए। कौवा के अंडों में से बच्चे निकल आए और वो बड़े होने लगे। एक दिन सांप को उनके नए घोंसले का पता चल गया और वह कौवों के जाने का इंतजार करने लगा। जैसे कौवे घोंसला छोड़ कर गए, सांप उनके घोंसले की ओर बड़ने लगा, लेकिन किसी कारण से कौवों का जोड़ा वापस पेड़ की ओर लौटने लगा। उन्होंने दूर से ही सांप को उनके घोंसले की ओर जाता देख लिया और जल्दी से वहां पहुंच कर अपने बच्चों को पेड़ की ओट में छुपा दिया। सांप ने देखा की घोंसला खाली है, तो वह कौवों की चाल समझ गया और वापस बिल में जाकर सही मौके का इंतजार करने लगा। इसी बीच कौवे ने सांप से पीछा छुड़ाने के लिए एक योजना बनाई। कौवा उड़कर जंगल के बाहर बने एक राज्य में चला गया। वहां एक सुंदर महल था। महल में राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ खेल रही थी। कौवा उसके गले में से मोतियों का हार लेकर उड़ गया। सभी ने शोर मचाया, तो पहरेदार हार लेने के लिए कौवे का पीछा करने लगे। कौवे ने जंगल में पहुंचकर हारा को सांप के बिल में डाल दिया, जिसे पीछे कर रहे सैनिकों ने देख लिया। जैसे ही सैनिकों ने हार निकालने के लिए बिल में हाथ डाला, तो सांप फुंकारता हुआ बाहर निकल आया। सांप को देखकर सैनिकों ने तलवार से उस पर हमला कर दिया, जिससे सांप घायल हो गया और अपनी जान बचाकर वहां से भाग गया। सांप के जाने के बाद कौवा अपने परिवार के साथ खुशी-खुशी रहने लगा।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

आवश्यकताएं बढ़ेंगी। आर्थिक तंगी हो सकती है। कर्ज से बचें। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। शत्रु परेशान करेंगे। हानि नहीं पहुंचा पाएंगे। चिंता तथा तनाव रहेंगे।

वृषभ

यात्रा, नौकरी व निवेश मनोनुकूल रहेंगे। बकाया वसूली होगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। विवाद न करें। नेत्र पीड़ा की संभावना। कुछ लाभ। यात्रा के योग टलेंगे।

मिथुन

कार्यप्रणाली में सुधार होगा। योजना फलीभूत होगी। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। यात्रा के योग बनेंगे। लाभ होगा। राज्य से परेशानी हो सकती है।

कर्क

राजकीय सहयोग प्राप्त होगा। धर्म-कर्म में रुचि रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। आय बढ़ेगी। हानि-लाभ का वातावरण बनेगा। पराक्रम बढ़ेगा। विजय मिलेगी, गर्व न करें।

सिंह

चोट, चोरी व विवाद आदि से हानि संभव है। व्यवसाय ठीक चलेगा। जल्दबाजी न करें। कष्ट होंगे। खर्च बढ़ेंगे। कर्ज लेना पड़ सकता है। धनागम के अवसर बनेंगे।

कन्या

कोर्ट व कचहरी के कार्य बनेंगे। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। धन प्राप्ति सुगम होगी। हानि, भय, कष्ट का वातावरण बनेगा। कुछ लाभ के आसार दिखेंगे।

तुला

संपत्ति के कार्य लाभ देंगे। थकान महसूस होगी। रोजगार में वृद्धि होगी। प्रसन्नता रहेगी। कष्टों में वृद्धि के योग हैं। कुछ नए कार्य की संभावना सिद्ध होगी।

वृश्चिक

रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। स्वादिष्ट भोजन का आनंद मिलेगा। व्यवसाय मनोनुकूल लाभ होगा। रोग घेरेंगे। चिंताएं बढ़ेंगी। शत्रु शांत होंगे। कुछ नुकसान होगा।

धनु

दौड़-धूप अधिक होगी। बुरी सूचना मिल सकती है। विवाद न करें। स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। धनलाभ के अवसर प्राप्त होंगे। अकारण भय व्याप्त होगा।

मकर

मेहनत का फल मिलेगा। कार्यसिद्धि होगी। प्रसन्नता रहेगी। घर-बाहर पूछ-परख बनी रहेगी। मातृपक्ष से परेशानी होगी। दुर्घटना की संभावना। धनागम के अवसर बढ़ेंगे।

कुम्भ

भूले-बिसरे साथियों से मुलाकात होगी। उत्साहवर्धक सूचना मिलेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। शत्रु शांत होंगे। कष्ट-भय की संभावना, अस्वस्थता, आलस्य का अनुभव करेंगे।

मीन

यात्रा, नौकरी व निवेश मनोनुकूल रहेंगे। अप्रत्याशित लाभ होगा। प्रसन्नता रहेगी। प्रमाद न करें। शुभ समाचार की आशा बंधेगी। शत्रु षड्यंत्र रचेंगे। नम्रता बनाए रखें।

साउथ की बड़ी फिल्म में हुई अनिल कपूर की एंट्री, जूनियर एनटीआर के साथ आयेंगे नजर

बॉलीवुड के एवर यंग एक्टर अनिल कपूर 69 साल की उम्र में भी काफी फिट हैं और फिल्मों में लगातार सक्रिय हैं। अब अनिल कपूर के हाथ साउथ की एक फिल्म लगी है। जिसमें वो जूनियर एनटीआर के साथ नजर आएंगे। इसकी जानकारी खुद अनिल कपूर ने दी है। अनिल कपूर ने इंस्टाग्राम पर एक स्टोरी के जरिए ये कंफर्म किया कि वो जूनियर एनटीआर की प्रशांत नील द्वारा निर्देशित फिल्म 'ड्रैगन' में नजर आएंगे। इस फिल्म के जरिए अनिल कपूर ने तेलुगु सिनेमा में वापसी की। अनिल कपूर ने अपने इंस्टाग्राम पर एक आईएमडीबी की फोटो शेयर की है। इसमें फिल्म 'ड्रैगन' को 2026 की बहुप्रतीक्षित फिल्मों में शामिल किया गया है। इसमें ड्रैगन की स्टारकास्ट में जूनियर एनटीआर और फिल्म की बाकी कास्ट के साथ अनिल कपूर का नाम भी शामिल है। इसके साथ ही अनिल ने कैप्शन में लिखा, 'एक आ चुकी है और बाकी दो लाइन में हैं।' इससे पता चलता है कि आने वाले दिनों में अनिल कपूर दो तेलुगु या साउथ की फिल्मों में नजर आ सकते हैं। या फिर हो सकता है कि साल 2026 में उनकी दो और फिल्मों की घोषणा होनी हो।

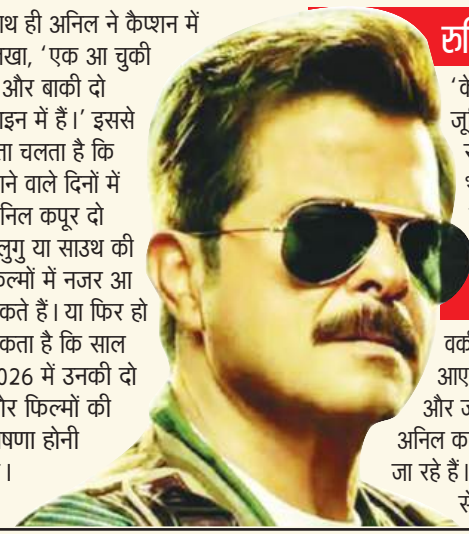

रुक्मिणी वसंत और टोविनो थॉमस भी आएंगे नजर

'केजीएफ' फेम निर्देशक प्रशांत नील द्वारा निर्देशित 'ड्रैगन' में जूनियर एनटीआर प्रमुख भूमिका में नजर आएंगे। उनके साथ रुक्मिणी वसंत और टोविनो थॉमस भी इस फिल्म में प्रमुख भूमिका में दिखाई देंगे। अब अनिल कपूर ने भी फिल्म में अपनी मौजूदगी को कंफर्म कर दिया है। फैंस इस फिल्म का बड़ी ही बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

'वॉर 2' में आखिरी बार नजर आए थे

वर्कफ्रंट की बात करें अनिल कपूर आखिरी बार 'वॉर 2' में नजर आए थे। यशराज के स्पाई-यूनिवर्स की इस फिल्म में ऋतिक रोशन और जूनियर एनटीआर प्रमुख भूमिकाओं में थे। अब 'वॉर 2' के बाद अनिल कपूर एक बार फिर जूनियर एनटीआर के साथ स्क्रीन साझा करने जा रहे हैं। हालांकि, अनिल कपूर ने साल 1980 में तेलुगु फिल्म वंश वृक्षम् से मुख्य भूमिका में अपने अभिनय की शुरुआत की थी।

गोविंदा पर भड़कीं सुनीता आहूजा कहा, मैं कभी माफ नहीं करूंगी

तलाक, कभी एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर... गोविंदा प्रोफेशनल लाइफ से ज्यादा पर्सनल लाइफ को लेकर सुर्खियां बटोर रहे हैं। यूं तो गोविंदा लाइमलाइट से दूर रहते हैं लेकिन उनकी पत्नी सुनीता आहूजा पिछले एक साल से लगातार अपने बयानों के चलते चर्चा में बनी हुई हैं।

सुनीता आहूजा इंटरव्यूज में ऐसे-ऐसे बयान दे रही हैं, जिससे कोई भी हैरान हो जाए। अलग-अलग रहने से लेकर तलाक और गोविंदा के एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर की अफवाहों तक... सुनीता निजी जिंदगी के बारे में बोलने से नहीं झिझकीं। अब एक बार फिर उन्होंने अपने पति को लेकर बड़ा बयान दे दिया है।

दरअसल, सुनीता आहूजा का एक क्लिप वायरल हो रहा है जो उनके लेटेस्ट पॉडकास्ट का है। मिस मालिनी के पॉडकास्ट का प्रोमो शेयर किया गया है जिसमें सुनीता अपने पति गोविंदा के एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर की अफवाहों पर हिंट देते हुए नजर आ रही हैं। उन्होंने कहा कि वह कभी भी गोविंदा को माफ नहीं करेंगी।

वीडियो में सुनीता आहूजा ने कहा, मैं गोविंदा को नहीं माफ करूंगी। मैं नेपाल की हूं। खुकुरी (चाकू या छुरा) निकाल दूंगी ना, सबकी हालत खराब हो जाएगी। इसलिए बोलती हूं, सतर्क हो जा बेटा अभी भी। एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर पर हिंट करते हुए सुनीता आहूजा ने कहा, ऐसी लड़कियां बहुत आती हैं लेकिन तुम थोड़ी बेवकूफ हो। तुम 63 के हो गए हो। सुनीता ने कहा, तुम्हें टीना की शादी करवानी है। यश का करियर है। उसने कभी भी गोविंदा से नहीं कहा कि आप इधर कॉल कर दो, उधर कॉल कर दो। नहीं किया। गोविंदा ने भी कोई हेल्प नहीं किया। मैंने तो गोविंदा के मुंह पर बोला कि तू बाप है कि क्या है। वीडियो में सुनीता आहूजा ने आगे कहा, ये नाम थोड़ा गड़बड़ है। मुझे नाम से नफरत है। हटा दो ये नाम।

बॉलीवुड | मन की बात

'शंघाई' और 'टाइगर 3' जैसी फिल्मों ने मेरी सीरियल किसर की इमेज को बदला : इमरान

इमरान हाशमी इन दिनों अपनी हालिया रिलीज सीरीज 'तस्करी: द स्मगलर्स वेब' को लेकर चर्चाओं में हैं। नीरज पांडे द्वारा निर्देशित इस सीरीज में इमरान हाशमी ने कस्टम ऑफिसर की भूमिका निभाई है। इस बीच अब इमरान ने अपनी सीरियल किसर और लवर बॉय वाली छवि को लेकर बात की। साथ ही उन्होंने बताया कि किस तरह वो इस छवि से बाहर निकलने का प्रयास कर रहे हैं। इमरान हाशमी ने खुद के टाइपकास्ट किए जाने पर बात की। उन्होंने कहा कि कोई एक भूमिका नहीं है, यह कभी एक नहीं होती। यह हमेशा एक यात्रा होती है। 'शंघाई' और 'टाइगर 3' जैसी फिल्मों ने उनके प्रति लोगों की सोच को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एक तरह से 'जन्नत' ने इस छवि को तोड़ा। जैसा कि 'वन्स अपॉन अ टाइम इन मुंबई' ने किया। तो किसी एक फिल्म से नहीं बल्कि कई फिल्मों का नतीजा था। अपने करियर की शुरुआत में मिली आलोचनाओं को याद करते हुए, इमरान ने कहा कि उन्हें यह गलत नहीं लगी। एक्टर ने कहा कि मैं यह नहीं कहूंगा कि आलोचक गलत थे। फिल्मों को लेकर उनकी अपनी राय थी, लेकिन मुझे पता था कि मैं यह कर सकता हूं। इसलिए मैंने उन्हें जवाब देते हुए कहा कि मैं शंघाई जैसी फिल्म बना सकता हूं। इसलिए अगर आप कहते हैं कि मैं सिर्फ एक ही तरह की फिल्म कर सकता हूं, तो दिबाकर बनर्जी जैसे निर्देशक के साथ मैं यह कर सकता हूं। इसलिए यह कुछ चीजों को साबित करने की बात थी, न सिर्फ खुद को। इमरान हाशमी आर्यन खान के शो द बैड्स ऑफ बॉलीवुड अपने ही किरदार में नजर आए थे। इसके बाद वो काफी वायरल हो गए थे। ऐसे में क्या इससे उनके करियर पर कोई असर पड़ा, इसको लेकर उन्होंने कहा कि मुझे सच में नहीं पता कि इसका मेरे लिए क्या असर होगा। लेकिन रिलेवेंट बने रहना बहुत मुश्किल है।

वफादारी की सच्ची मिसाल, मरे हुए मालिक की हर रोज करता है लौटने का इंतजार

कुत्तों की गिनती धरती के सबसे वफादार जानवरों में होती है, जो अपने मालिक के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। यहां तक कि जरूरत पड़ने पर मालिक की जान बचाने के लिए वो अपनी जान भी दे देते हैं। ऐसे में जरा सोचिए कि अगर किसी कारणवश मालिक की मौत हो जाए तो उस पालतू कुत्ते के ऊपर क्या बीतेगी। ऐसा ही एक मामला इन दिनों काफी चर्चा में है। दरअसल, चीन में एक पालतू कुत्ता हफ्तों से अपने मालिक के घर के बाहर उसका इंतजार कर रहा है, क्योंकि उसे पता नहीं है कि उसकी मालिक की मौत हो चुकी है। हैरानी की बात तो ये है कि वो इतने गम में डूबा हुआ है कि ठीक से खाना भी नहीं खाता। इस कुत्ते की वफादारी ने सोशल मीडिया यूजर्स का दिल जीत लिया है। साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, इस कुत्ते की मार्मिक कहानी की तुलना साल 2009 में आई फिल्म 'हाची: ए डॉग्स टेल' से की गई है, जो जो 1920 के दशक में घटी जापान की एक सच्ची घटना से प्रेरित है। फिल्म में हाची नाम का कुत्ता अपने मालिक की मौत के बाद 10 साल तक हर दिन रेलवे स्टेशन पर उसका इंतजार करता है, जब तक कि उसकी भी मौत नहीं हो जाती। शंघाई के बाओशान जिले के एक समुदाय में रहने वाला ये कुत्ता अपने आज्ञाकारी स्वभाव और बच्चों या बुजुर्ग लोगों पर भौंकने की आदत के कारण स्थानीय लोगों के बीच काफी लोकप्रिय है। बीते 6 जनवरी को कुत्ते के अचानक लापता होने पर चिंतित पड़ोसियों ने शंघाई टीवी स्टेशन से संपर्क किया, जिसके बाद इस कुत्ते ने सबका ध्यान आकर्षित किया। रिपोर्ट्स के मुताबिक, पिछले एक दशक से गाओ नाम का एक शख्स इस कुत्ते की देखभाल कर रहा था, लेकिन 11 दिसंबर को अचानक बीमारी के कारण उसकी मौत हो गई। तब से कुत्ता घर के बाहर इमारत के गलियारे में ही रह रहा था और इसी इंतजार में था कि उसका मालिक आएगा। हालांकि बाद में वो गायब हो गया। जब सोशल मीडिया पर कुत्ते के लापता होने की खबर फैली तो पुलिस के साथ-साथ लोग भी उसकी तलाश में जुट गए। हालांकि बाद में उसे ढूंढ लिया गया। एक महिला ने बेघर बिल्लियों और कुत्तों को खाना खिलाते समय उसे छिपा हुआ देखा। महिला ने बताया कि उसका शरीर कांप रहा था और वह हताश दिख रहा था। उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे। अब इस घटना के बारे में जानकर हर किसी का दिल पसीज गया है।

अजब-गजब | यहां पर लोगों की जिंदगी कटती है अजीबो-गरीब

115 घरों में रहते हैं 1200 लोग, यहां नहीं चलता कोई कानून

दुनिया के नक्शे पर एक ऐसा छोटा सा द्वीप मौजूद है, जो अपनी भौगोलिक बनावट से कहीं ज्यादा अपनी इंसानी आबादी के जाल के लिए जाना जाता है। कोलंबिया के सैन बर्नार्डो द्वीप समूह में स्थित 'सांता क्रूज डेल इस्लाट' एक ऐसी जगह है जिसे देखकर ऐसा लगता है मानो समंदर के बीचों-बीच इंसानों का कोई छत्ता बस गया हो। यहां की बसावट इतनी सघन है कि घरों की दीवारें एक-दूसरे से सटी हुई हैं और गलियां इतनी तंग हैं कि दो लोग एक साथ मुश्किल से गुजर पाते हैं। करीब 1,200 लोगों की आबादी वाले इस द्वीप की सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि यहां न तो कोई पुलिस स्टेशन है, न कोई जेल और न ही सुरक्षा के लिए कोई कानून प्रवर्तन एजेंसी, फिर भी यहां लोग बेखौफ रहते हैं।

इस द्वीप का इतिहास किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं है। 19वीं सदी तक यहां कोई नहीं रहता था, लेकिन जब मछुआरों ने यहां रुकना शुरू किया, तो उन्हें एक अनोखी बात पता चली। उन्होंने महसूस किया कि समंदर के बीच होने के कारण यहां मच्छरों का नामोनिशान नहीं है, जो उस समय तटीय इलाकों में एक बड़ी मुसीबत थे। बस यही सुकून उन्हें यहां खींच लाया और देखते ही देखते एक छोटी सी चट्टान एक विशाल मानवीय कॉलोनी में बदल गई।

आज यहां लगभग 115 घर हैं, जिनमें पीढ़ियों से लोग साथ रह रहे हैं। जमीन की कमी का आलम यह है कि यहां अब नए घर बनाने की जगह नहीं बची है, इसलिए लोग पुराने घरों के ऊपर ही नई मंजिलें खड़ी कर रहे हैं। हालांकि, यह द्वीप क्षेत्रफल में दो फुटबॉल मैदानों के बराबर ही है, लेकिन यहां की हलचल किसी महानगर जैसी महसूस होती है। सांता क्रूज डेल इस्लाट की जीवनशैली आधुनिक सुख-सुविधाओं और शहरी शोर-शराबे से कोसों दूर है। यहां न तो कोई कार है और न ही पक्की सड़कें, क्योंकि गाड़ियां चलाने के लिए यहां जगह ही नहीं बची है। पीने के पानी के लिए यहां के निवासी पूरी तरह मुख्य भूमि से आने वाले जहाजों पर निर्भर हैं, जो हफ्ते में एक बार पानी की सप्लाई करते हैं। बिजली की समस्या और गरीबी यहां की कड़वी हकीकत है, लेकिन इसके बावजूद यहां के लोग अपनी इस तंग सी दुनिया को छोड़कर कहीं और नहीं जाना चाहते। उनका मानना है कि दुनिया के बढ़ते अपराधों और असुरक्षा से यह छोटी सी जगह कहीं ज्यादा सुरक्षित और शांतिपूर्ण है। जैसे-जैसे इस द्वीप की चर्चा पूरी दुनिया में फैली, यहां पर्यटकों का तांता लग गया।

बाहरी दुनिया से आने वाले लोग यहां की भीड़भाड़ को कौतूहल भरी नजरों से देखते थे, जिससे यहां के निवासियों को अपनी निजता का उल्लंघन महसूस होने लगा। इसके विरोध में अब स्थानीय लोगों ने यहाँ आने वाले पर्यटकों से शुल्क लेना शुरू कर दिया है। इस पैसे का इस्तेमाल द्वीप की सामूहिक सुविधाओं को सुधारने और बच्चों की शिक्षा में किया जाता है। यहां आने वाले सैलानियों के लिए यह एक अजूबा है कि कैसे इतने कम संसाधन में लोग इतने खुशहाल रह सकते हैं। द्वीप की सबसे बड़ी खासियत यहां का 'जीरो क्राइम' रेट है। यहां के निवासी एक बड़े परिवार की तरह रहते हैं, जहां हर कोई एक-दूसरे के सुख-दुख का साथी है। बच्चों के लिए पूरी बस्ती ही खेल का मैदान है और उन्हें किसी सड़क हादसे का डर नहीं सताता। सांता क्रूज डेल इस्लाट के लोग गरीबी के बीच भी जिस सामुदायिक एकता के साथ रह रहे हैं, वह आधुनिक दुनिया के लिए एक मिसाल है।

संविधान और न्यायपालिका की स्वतंत्रता की रक्षा की जाए : ममता

» मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत से पश्चिम बंगाल की सीएम ने की अपील

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत से संविधान, लोकतंत्र और न्यायपालिका की स्वतंत्रता की रक्षा करने की अपील की, साथ ही उन्होंने जांच एजेंसियों के दुरुपयोग के खिलाफ भी चेतावनी दी। बनर्जी ने मुख्य न्यायाधीश से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया कि नागरिकों को गलत तरीके से निशाना न बनाया जाए। उन्होंने कहा कि कृपया संविधान, लोकतंत्र, न्यायपालिका, इतिहास और भूगोल के साथ-साथ देश की सीमाओं को भी आपदा से बचाएं। मुख्य न्यायाधीश को संविधान का संरक्षक बताते हुए बनर्जी ने कहा कि न्यायपालिका को पूर्वाग्रह से मुक्त रहना चाहिए।

मामलों के अंतिम निर्णय से पहले मीडिया ट्रायल नहीं हो

तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ने मीडिया ट्रायल का मुद्दा भी उठाया और तर्क दिया कि अदालतों द्वारा फैसला सुनाए जाने से पहले ही मामलों पर सार्वजनिक रूप से बहस होने लगी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मामलों के अंतिम निर्णय से पहले मीडिया ट्रायल नहीं होना चाहिए। यह लोगों को बदनाम करने का एक जरिया बन गया है। कृपया सुनिश्चित करें कि एजेंसियां जानबूझकर नागरिकों को बदनाम करने का प्रयास न करें। मैं अपनी ओर से नहीं बोल रहा हूं। मैं यह लोकतंत्र, जनता, न्यायपालिका और संविधान को बचाने के लिए कह रहा हूं। हम आपकी देखरेख में हैं। आपसे ऊपर कोई नहीं है। मुख्यमंत्री की यह टिप्पणी बंगाल में प्रवर्तन निदेशालय और तृणमूल कांग्रेस सरकार के बीच बढ़ते गतिरोध के बीच आई है, जो संघीय एजेंसी द्वारा मनी लॉन्ड्रिंग जांच के सिलसिले में तृणमूल की राजनीतिक परामर्श फर्म आई-पीएसी सहित 10 स्थानों पर छापेमारी के बाद शुरू हुआ था। बनर्जी ने विधि समुदाय की स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि कनिष्ठ वकील संघर्ष कर रहे हैं और उन्हें उनके उचित लाभ नहीं मिल रहे हैं। उन्होंने मुख्य न्यायाधीश से पेशे में प्रवेश करने वाली नई पीढ़ी का विशेष ध्यान रखने का आग्रह किया।

विवेक ज्ञान से भिन्न होता है : सीजेआई सूर्यकांत

प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा कि विवेक ज्ञान से भिन्न होता है और उनका मानना है कि विवेक का आशय इस बात को जानने से है कि कानून के अक्षरशः पालन पर कब जोर देना है और कब उस उद्देश्य को समझना है जिसकी पूर्ति के लिए वह कानून बनाया गया है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि ज्ञान पुस्तकों, संभवतः कक्षा और प्रशिक्षण से शीघ्रता से प्राप्त किया जा सकता है लेकिन उसके बाद जो कुछ भी होता है वह अनुभव, त्रुटि और निरंतर चिंतन के माध्यम से कहीं अधिक धीरे-धीरे, अक्सर अपूर्ण रूप से आकार लेता है। प्रधान न्यायाधीश इस विवि के कुलाधिपति भी हैं। न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने कहा, विवेक का अर्थ यह जानना है कि कब बोलना है और कब मौन रहना अधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने चार साल के अंतराल के बाद आयोजित दीक्षांत समारोह में कहा, यह जानना जरूरी है कि कानून के अक्षरशः पालन पर कब जोर दिया जाए और इसके पीछे के उद्देश्य को समझा जाए। प्रधान न्यायाधीश ने कहा, हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहां तुरंत राय बन जाती है और बिना इंतजार किए प्रतिक्रिया की उम्मीद की जाती है। उन्होंने कहा कि ऐसी दुनिया में विवेकशीलता दुर्लभ हो गई है और इसलिए यह 'अत्यंत मूल्यवान' है।

दोषसिद्धि से पहले जमानत मिलनी ही चाहिए : चंद्रचूड़

» बोले- लंबी जेल की सजा संवैधानिक न्याय को कमजोर करती है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली दंगों के आरोपी उमर खालिद की जमानत सुप्रीम कोर्ट से नामंजूर किए जाने के बाद अब इस पर पूर्व सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ का बड़ा बयान सामने आया है। पूर्व सीजेआई ने उमर खालिद जैसे मामलों का हवाला देते हुए कहा कि बिना मुकदमे के लंबी जेल की सजा संवैधानिक न्याय को कमजोर करती है और जमानत की मांग करती है। जयपुर में एक कार्यक्रम में पूर्व सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा कि दोष सिद्धि से पहले जमानत प्राप्त करना एक नागरिक का अधिकार है। इसके साथ ही उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि जिन मामलों में राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मुद्दे शामिल हों, उनमें इस प्रकार की राहत देने से पूर्व मामले की गहराई पड़ताल की जानी चाहिए।

पूर्व न्यायमूर्ति ने विभिन्न मामलों का उदाहरण देते हुए कहा, अगर आरोपी के समाज में लौट कर फिर से अपराध को अंजाम देने, सबूतों से छेड़छाड़ करने या जमानत का फायदा कानून के शिकंजे से भाग निकलने के लिए किए जाने की आशंका है तो आरोपी को जमानत देने से इंकार किया जा सकता है। उमर खालिद के मामले में डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा, वे पांच साल से जेल में हैं। मैं अपने न्यायालय की आलोचना नहीं कर रहा हूं, जमानत की शर्तों का दुरुपयोग रोकने के लिए आप शर्तें लगा सकते हैं, लेकिन आपको यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि उन्हें शीघ्र सुनवाई का अधिकार है। यदि वर्तमान परिस्थितियों में शीघ्र सुनवाई संभव नहीं है, तो जमानत अपवाद नहीं बल्कि नियम होना चाहिए। उन्होंने कहा, कि मैंने अपने 24 महीनों के कार्यकाल में, हमने 21,000 जमानत याचिकाओं का निपटारा किया है। ऐसे कई मामले होते हैं जिनके बारे में लोग सुप्रीम कोर्ट की किसी विशेष मामले में जमानत न देने के लिए आलोचना करते समय नहीं सोचते।

अनुभवों को नजरअंदाज कर देने से सच्चाई नहीं बदल जाती: महबूबा मुफ्ती

» पीडीपी प्रमुख ने रहमान की चिंताओं पर जावेद अख्तर की टिप्पणी पर दी प्रतिक्रिया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने कहा कि गीतकार और पटकथा लेखक जावेद अख्तर बॉलीवुड के कथित सांप्रदायिकरण को लेकर संगीतकार ए आर रहमान की चिंताओं को खारिज करके भारतीय मुसलमानों की वास्तविकताओं का खंडन कर रहे हैं।

मुफ्ती ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, जब जावेद अख्तर बॉलीवुड में बढ़ते सांप्रदायिकरण को लेकर ए आर रहमान की चिंताओं को खारिज करते हैं, तो वह भारतीय मुसलमानों के वास्तविक अनुभवों का खंडन करते हैं, जिसमें उनकी पत्नी शबाना आज़मी के अनुभव भी शामिल हैं, जिन्होंने खुले तौर पर यह कहा है कि उन्हें बंबई जैसे महानगर में सिर्फ मुसलमान होने की वजह से मकान किराए पर देने से इनकार कर दिया गया था। अख्तर ने कहा कि रहमान को बॉलीवुड में काम के कम अवसर मिलने में कोई सांप्रदायिक तत्व शामिल नहीं है। जम्मू कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, बॉलीवुड हमेशा से देश की सामाजिक सच्चाइयों को प्रतिबिंबित करता हुआ एक जीवंत 'मिनी-इंडिया' रहा है। ऐसे अनुभवों को नजरअंदाज कर देने से आज के भारत की सच्चाई नहीं बदल जाती।

अमरावती में नवनीत के खिलाफ उतरे भाजपाई

» 22 उम्मीदवारों ने फडणवीस को लिखा पत्र

» बोले- पूर्व सांसद की वजह से हुई हार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। चुनाव के बाद नाटकीय घटनाक्रम में अमरावती नगर निगम चुनाव में भाजपा के 22 उम्मीदवारों ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से पूर्व सांसद नवनीत राणा को पद से हटाने का आग्रह किया है। उम्मीदवारों का आरोप है कि नवनीत ने पार्टी के उम्मीदवारों के खिलाफ प्रचार करके पार्टी को कमजोर किया है। 15 जनवरी को हुए चुनावों में भाजपा की सीटों में भारी गिरावट आई, जिससे टूटे हुए गठबंधन के बीच विश्वासघात के आरोप और भी बढ़ गए हैं।

चुनाव में करारी हार 87 सदस्यीय एएमसी में भाजपा को पिछली बार की 45 सीटों के मुकाबले मात्र 25 सीटें मिलीं, जबकि वाईएसपी को 3 के मुकाबले 15 सीटें मिलीं। कांग्रेस को (15), एनसीपी (11), एआईएमआईएम (12), शिवसेना (3),बसपा (3),शिवसेना (यूबीटी)(2), वंचित बहुजन अघाड़ी (1) की सीटें मिलीं। चुनाव से पहले, भाजपा और वाईएसपी ने संबंध तोड़ लिए थे, फिर भी भाजपा के एक स्थानीय नेता ने जोर देकर कहा कि नवनीत भगवा उम्मीदवारों का समर्थन करेंगी। इसके विपरीत, उन्होंने कथित तौर पर भाजपा उम्मीदवारों को बेवकूफ करार दिया और वाईएसपी को असली भाजपा के रूप में पेश किया। 22 शिकायतकर्ताओं में से 20 हारे और 2 जीते, लेकिन सभी नवनीत के हस्तक्षेप की ओर इशारा कर रहे हैं। मुख्यमंत्री को लिखे अपने पत्र में उन्होंने कहा, हम समर्पित, मेहनती पार्टी कार्यकर्ता हैं जो समाज से जुड़े हुए हैं। हमारी हार विपक्ष की वजह से नहीं, बल्कि राणा के खुलेआम हमारे खिलाफ प्रचार करने की वजह से हुई है। उन्होंने चेतावनी दी है कि नवनीत को पार्टी में बनाए रखने से अमरावती में भाजपा की पकड़ कमजोर हो सकती है और उन्हें तत्काल निष्कासित करने की मांग की है।

पूर्व सांसद राणा की ओर से नहीं आयी कोई प्रतिक्रिया

नवनीत राणा की प्रतिक्रिया अभी तक नहीं आई है, जिससे विवाद अधर में लटका हुआ है। यह दशर गठबंधन टूटने के बाद महाराष्ट्र भाजपा, विशेषकर विदर्भ में, गहरी होती दरारों को उजागर करती है।

38 साल में पहली बार न्यूजीलैंड ने भारत में जीती सीरीज

» कीवियों ने भारत को 41 रन से हराकर तीन मैचों की सीरीज 2-1 से अपने नाम की

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

इंदौर। 38 साल बाद न्यूजीलैंड ने भारत की सरजमीं पर इतिहास रच दिया। इंदौर के होल्कर स्टेडियम में खेले गए तीसरे और निर्णायक वनडे मुकाबले में कीवियों ने भारत को 41 रन से हराकर तीन मैचों की सीरीज 2-1 से अपने नाम कर ली। इससे पहले टीम 1988 से लगातार असफल रही थी। इस हार के साथ भारत को इंदौर में भी पहली बार वनडे में शिकस्त झेलनी पड़ी, जहां उसने इससे पहले लगातार सात मैच जीते थे। इस मुकाबले में भारत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया।

पहले बल्लेबाजी करते हुए न्यूजीलैंड ने निर्धारित 50 ओवरों में आठ विकेट पर 337 रन बनाए। लक्ष्य का पीछा करते हुए भारतीय टीम 46 ओवर में 296 रन पर सिमट गई। भारत की ओर से विराट कोहली ने बेहतरीन 124 रन की पारी खेली, जबकि हर्षित राणा ने 52 रन का योगदान दिया। भारत की शुरुआत खराब रही। रोहित 11 रन जबकि शुभमन गिल 23 रन ही बना सके। अय्यर और राहुल भी बड़ी पारी खेलने में नाकाम रहे, जिससे भारत का स्कोर 71/4 हो गया। इसके बाद कोहली ने नीतीश कुमार रेड्डी (57 गेंदों पर 53 रन) के साथ अहम साझेदारी कर मैच में जान फूंकी। कोहली ने सटीक ड्राइव्स, नियंत्रित पुल शॉट्स और जरूरत के हिसाब से बड़े शॉट खेलते हुए रन गति बनाए रखी। लेकिन उनके आउट होते ही भारतीय पारी की आखिरी उम्मीद भी खत्म हो गई। इससे पहले, डेरिल मिचेल के लगातार दूसरे शतक और ग्लेन फिलिप्स के तूफानी शतक लगाया। हालांकि, भारतीय तेज गेंदबाजों ने शुरुआत में मेहमान टीम को बड़े झटके दिए थे। मिचेल (137 रन) और फिलिप्स (106 रन) ने चौथे विकेट के लिए 219 रनों की शानदार साझेदारी की, जिसने न्यूजीलैंड की पारी की दिशा ही बदल दी।

मेजबान सात साल बाद घर में हारा वनडे सीरीज

कोहली ने जड़ा 85वां अंतरराष्ट्रीय शतक

इंदौर। भारतीय टीम के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने रविवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ खेले गए मुकाबले में अपना 85वां अंतरराष्ट्रीय शतक पूरा किया। वह शानदार फॉर्म में नजर आए और न्यूजीलैंड के खिलाफ सर्वाधिक शतक लगाने वाले बल्लेबाज बन गए। इंदौर में कोहली ने 92 गेंदों में अपना शतक पूरा किया। यह उनका वनडे में 54वां शतक है। वहीं, न्यूजीलैंड के खिलाफ वनडे में वह सबसे ज्यादा शतक जड़ने वाले बल्लेबाज बन गए। 36 पारियों में उनके नाम सात शतक दर्ज हो गए हैं। इस मामले में उन्होंने रिकी पोंटिंग, वीरेंद्र सहवाग, सचिन तेंदुलकर और सनथ जयसूर्या को पीछे छोड़ दिया। भारत में यह कोहली के बल्ले से 41वां शतक निकला है।

तमिलनाडु की उपेक्षा कर रही है केंद्र सरकार : मणिक्कम टैगोर

» बोले कांग्रेस नेता- महत्वपूर्ण विकास परियोजनाओं में नजरअंदाज किया जा रहा है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

राज्य की उपेक्षा पर गंभीर परिणामों की चेतावनी दी

कांग्रेस सांसद ने स्थिति को भेदभावपूर्ण बताते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 2026 के तमिलनाडु विधानसभा चुनावों में राज्य की उपेक्षा के गंभीर परिणामों की चेतावनी दी। उन्होंने कहा, तमिलनाडु ने कोई एहसान नहीं मांगा है। वह सिर्फ अपना उचित हिस्सा मांग रहा है। लोकतंत्र में विकास में पक्षपात अस्वीकार्य है। यह भेदभाव क्यों, श्री मोदी? तमिलनाडु को लगातार हाशिए पर क्यों रखा जा रहा है? जनता देख रही है। वे 2026 में भी आपको 'ना' कहेंगे।

चेन्नई। कांग्रेस सांसद मणिक्कम टैगोर ने केंद्र सरकार पर जमकर निशाना साधा और आरोप लगाया कि भारत के विकास में तमिलनाडु राज्य की अहम भूमिका होने के बावजूद, सरकार उसे महत्वपूर्ण विकास परियोजनाओं में नजरअंदाज कर रही है। टैगोर ने कहा कि सरकार ने मदुरै और कोयंबटूर मेट्रो परियोजनाओं के साथ-साथ होसुर हवाई अड्डे की परियोजना को भी अनदेखा किया है।

उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा कि तमिलनाडु देश के विकास में अहम भूमिका निभाने के बावजूद, इन परियोजनाओं समेत अपने हक के विकास कार्यों से वंचित है। टैगोर ने आगे लिखा कि मदुरै मेट्रो नहीं... कोयंबटूर मेट्रो नहीं... अब तो होसुर हवाई अड्डा भी नहीं... तमिलनाडु की प्रमुख बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को एक-एक करके नकारा जा रहा है। यह अलग रवैया क्यों? जीडीपी, निर्यात, लघु एवं मध्यम उद्यम और रोजगार - तमिलनाडु भारत के विकास में अहम भूमिका निभाता है। फिर भी, क्या इसे केंद्र सरकार की योजनाओं में नजरअंदाज किया जा रहा है?

उन्होंने मदुरै और कोयंबटूर को देश के दक्षिणी क्षेत्र के प्रमुख विकास केंद्र बताते हुए होसुर को उद्योग, रसद और रोजगार की रीढ़ बताया। केंद्र सरकार पर तीखा प्रहार करते हुए टैगोर ने जोर दिया कि इन परियोजनाओं को अस्वीकार करना लाखों लोगों के लिए अवसरों की पहुंच में बाधा है।

उन्होंने कहा कि मदुरै, कोयंबटूर - दक्षिण भारत के प्रमुख विकास केंद्र। होसुर - उद्योग, रसद और रोजगार की रीढ़। इन परियोजनाओं को अस्वीकार करना लाखों लोगों के लिए अवसरों को अस्वीकार करना है। टैगोर ने राजनीतिक सहयोग और संघवाद के रुख पर सवाल उठाते हुए पूछा कि क्या यह केवल भाषणों तक ही सीमित है और इसका कोई कार्य योजना बनाने का इरादा नहीं है? उन्होंने कहा कि राजनीतिक सहयोग के बिना विकास? क्या संघवाद सिर्फ भाषणों के लिए है, कार्यों के लिए नहीं?

लोक गायिका नेहा सिंह राठौर हजरतगंज कोतवाली पहुंचीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लखनऊ के हजरतगंज कोतवाली में लोक गायिका नेहा सिंह राठौर पहुंचीं । वह एक बार फिर थाने में बयान दर्ज कराने के लिए पहुंचीं थीं। बता दें पहलगाम आतंकी हमले के बाद कथित आपत्तिजनक सोशल मीडिया पोस्ट के मामले में उनपर हजरतगंज थाने में एफआईआर दर्ज हुई थी।

उनपर राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सौहार्द प्रभावित करने का आरोप लगा था। हालांकि 8 जनवरी को सुप्रीम कोर्ट से नेहा सिंह राठौर को गिरफ्तारी पर रोक लगी है। इससे पहले वह 3 जनवरी की रात 9 बजे अपने पति के साथ हजरतगंज कोतवाली पहुंची थीं। नेहा को रात होने के चलते ,कागज़ात और सुरक्षा कारणों से पुलिस ने लौटा दिया था।

नेता प्रतिपक्ष चौपाल लगाकर जानेंगे जनता का हाल

» कल राहुल गांधी किसानों के साथ करेंगे बातचीत

» आज से रायबरेली के दौरे पर कांग्रेस सांसद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सांसद राहुल गांधी सोमवार को रायबरेली आ रहे हैं। वे इस दौरे में पदाधिकारियों से बात-चीत करेंगे। रोहनिया ब्लॉक के उमरन गांव में मंगलवार को चौपाल लगाएंगे। किसानों को का हलचाल भी जानेंगे। रायबरेली से चुनाव जीतने के बाद यह पहला मौका होगा, जब राहुल गांधी इस तरह गांव जाकर जनता के बीच चौपाल लगाकर उनका कुशलक्षेम जानने का प्रयास करेंगे।

राहुल का यह दौरा अहम माना जा रहा है, क्योंकि पंचायत चुनाव भी होना है। राहुल पंचायत चुनाव की तैयारियों और एसआईआर पर पदाधिकारियों से चर्चा कर सकते हैं उधर, दिल्ली से आई सीआरपीएफ की टीम ने राहुल के कार्यक्रम स्थलों पर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। टीम आईटीआई कॉलोनी स्थित राजीव गांधी स्टेडियम पहुंची, जहां पर राहुल गांधी क्रिकेट टूर्नामेंट का शुभारंभ करेंगे। सीओ सदर अरुण कुमार नौहवार ने बताया कि राहुल गांधी के दौरे को लेकर सभी तैयारियां की जा रही हैं।

सिटी मजिस्ट्रेट राम अवतार ने बताया कि 19 जनवरी की शाम 7: 45 बजे सांसद राहुल गांधी लखनऊ एयरपोर्ट से सड़क मार्ग होते हुए रात 9:15 बजे भुएमऊ गेस्ट पहुंचेंगे। 20 जनवरी की सुबह नौ बजे से 10 बजे तक गेस्ट हाउस में पार्टी पदाधिकारियों, प्रतिनिधियों आदि से मुलाकात करेंगे। पूर्वाह्न 11:15 से 11:30 बजे तक गेस्ट हाउस में ही सांसद निधि के कार्यों का उद्घाटन करेंगे। दोपहर 11:45 से 12 बजे राजकीय क्रिकेट प्रतियोगिता उद्घाटन करेंगे। दोपहर 12:15 से 12:30 बजे तक पालिकाध्यक्ष शत्रोहन सोनकर के घर पर रहेंगे। दोपहर 1:45 बजे से 2:45 बजे तक रोहनिया उमरन गांव में मनरेगा की चौपाल लगाएंगे। रात में भुएमऊ गेस्ट में रात्रि विश्राम करेंगे। अगले दिन 21 जनवरी की सुबह 8:10 बजे दिल्ली के लिए रवाना हो जाएंगे।

21 को कुरुक्षेत्र में कांग्रेस के जिला इकाई अध्यक्षों को संबोधित करेंगे राहुल

कांग्रेस नेता राहुल गांधी 21 जनवरी को कुरुक्षेत्र में हरियाणा और उत्तराखंड के पार्टी के जिला इकाई अध्यक्षों के लिए प्रशिक्षण शिविर को संबोधित करेंगे। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने हरियाणा के जिला इकाई अध्यक्षों को संबोधित करने के बाद यहां पत्रकारों को बताया कि गांधी 21 जनवरी को यहां पहुंचेंगे। कांग्रेस ने हरियाणा और उत्तराखंड में अपने संगठनात्मक ढांचे को मजबूत करने की दिशा में इन राज्यों के जिला इकाई अध्यक्षों के लिए एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया है। कुरुक्षेत्र में 13 से 22 जनवरी तक आयोजित इस शिविर में हरियाणा के 33 और उत्तराखंड के 27 जिला अध्यक्ष भाग ले रहे हैं।हुड्डा ने पत्रकारों से कहा कि भाजपा ने 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने का वादा किया था, लेकिन आय बढ़ने के बजाय उनकी लागत कई गुना बढ़ गई है। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ने सरकार पर लाडो लक्ष्मी योजना के नाम पर महिलाओं को धोखा देने का आरोप भी लगाया। हुड्डा ने दावा किया कि चुनाव के दौरान भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने सभी महिलाओं को 2,100 रुपये प्रति माह देने का वादा किया था, लेकिन अब यह लाभ केवल सीमित संख्या में महिलाओं को ही मिल रहा है।

किश्तवाड़ एनकाउंटर में सेना का जवान बलिदान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले के सिंहपोरा में सुरक्षाबलों और पाकिस्तान समर्थित आतंकियों के बीच मुठभेड़ हुई। दोनों तरफ से हुई भारी गोलीबारी एक जवान बलिदान हो गया तो वहीं सात जवान घायल हुए हैं, जिन्हें इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया गया है। वहीं, दूसरी तरफ सुरक्षाबलों ने आतंकियों को घेर लिया है।

अधिकारियों ने बताया कि रात भर रुकने के बाद, सुरक्षाबलों ने सोमवार को जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले के ऊपरी इलाकों में छिपे होने की संदेह पर सर्च ऑपरेशन फिर से शुरू कर दिया। यह ऑपरेशन रविवार को चतरू बेल्ट में मंदराल-सिंहपोरा के पास सोनार गांव में शुरू किया गया था। अधिकारियों ने बताया कि घनी हरियाली और खड़ी ढलानों वाले मुश्किल इलाके में रविवार देर रात ऑपरेशन रोक दिया गया था, जिससे विजिबिलिटी और मूवमेंट सीमित हो गया था। अधिकारियों ने बताया कि सेना, पुलिस और अर्धसैनिक बलों की कई टीमें, ड्रोन और स्निफर कुत्तों की मदद से, इलाके की तलाशी ले रही हैं, साथ ही एक सख्त सुरक्षा घेरा बनाए हुए हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि आतंकवादी भाग न सकें।

दक्षिणी स्पेन में दो हाई स्पीड ट्रेनों की टक्कर, 39 की मौत

» 70 से अधिक घायल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मैड्रिड । दक्षिणी स्पेन में दो तेज रफ्तार ट्रेनों की आपस में भिड़ंत हो गई। जिसमें कम से कम 39 लोगों की मौत हो गई और 70 से ज्यादा लोग घायल बताए जा रहे हैं। यह दुर्घटना कॉर्डोबा प्रांत के आदमूज के पास हुई, जिसके चलते मैड्रिड और अंडालूसिया के बीच रेल सेवाएं निलंबित कर दी गईं।

जानकारी के मुताबिक मलागा से मैड्रिड जा रही एक ट्रेन पटरी से उतर गई और सामने से आ रही दूसरी ट्रेन से टकरा गई। मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक दोनों ट्रेनों में लगभग 500 यात्री सवार थे। स्पेनिश रेल ऑपरेटर एडीआईएफ ने दक्षिणी स्पेन में एक तेज रफ्तार ट्रेन पटरी से उतर गई और विपरीत दिशा से आ रही ट्रेन से टकरा गई। आपातकालीन सेवाओं ने बताया कि इस टक्कर में 21 लोगों की मौत हो गई और 70 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। हालांकि मृतकों की संख्या बढ़ने की आशंका जताई गई है। गार्डिया सिविल के दो अधिकारियों ने फोन और टेक्स्ट मैसेज के जरिए एसोसिएटेड प्रेस को मृतकों की संख्या की पुष्टि की। उन्होंने पुलिस नियमों के अनुसार नाम न छापने की शर्त पर बात की।

बारात ले जा रही बस पलटी, नौ लोगों की मौत

» झारखंड के लातेहार जिले हुआ हादसा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रांची। झारखंड के लातेहार जिले में बारात ले जा रही एक बस के पलट जाने से उसमें सवार कम से कम नौ लोगों की मौत हो गई और 80 अन्य घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि यह हादसा महुआडांड़ पुलिस थाना क्षेत्र के अंतर्गत ओरसा बंगलाधारा घाटी में हुआ।

पुलिस अधीक्षक (एसपी) कुमार गौरव ने कहा, ''छत्तीसगढ़ के बलरामपुर जिले से बारात लेकर बस लातेहार के महुआडांड़ आ रही थी। बस पलट गई और पांच लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। मरने वालों में से चार महिलाएं शामिल हैं। घायलों को अस्पताल ले जाया गया है।वहीं, एक अन्य अधिकारी ने बताया कि लातेहार के अस्पताल में इलाज के

दौरान दो और लोगों की मौत हो गई जबकि गुमला सदर अस्पताल में भी दो लोगों की मौत हुई। गुमला के सिविल सर्जन शंभूनाथ चौधरी ने कहा कि नौ घायलों को यहां के सदर अस्पताल में रेफर किया गया था जिनमें से दो को मृत घोषित कर दिया गया। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में लातेहार के उपायुक्त को घायलों को उचित चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने का निर्देश दिया। उपमंडल अधिकारी (एसडीएम) विपिन कुमार दुबे ने बताया कि 60 घायलों को महुआडांड़ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में और 20 से अधिक को एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उन्होंने कहा, ''गंभीर हालत वाले 32 लोगों को बेहतर इलाज के लिए रांची स्थित राजेंद्र आयुर्विज्ञान संस्थान (रिम्स) भेजा जा रहा है।'' दुबे ने बताया कि मृतकों की पहचान रेशांति देवी (35), प्रेमा देवी (37), सीता देवी (45), सोनमती देवी (55), सुखना भुइयां (40) और विजय भुइयां के रूप में हुई है।

उन्होंने बताया कि लातेहार अस्पताल में जिस महिला की मौत हुई, उसकी पहचान की जा रही है। बस चालक विकास पाठक ने बताया कि बस में करीब 90 यात्री सवार थे। उसने संवाददाताओं से कहा, ''बस के ब्रेक फेल हो गए। हैंडब्रेक का इस्तेमाल करके और इंजन बंद करके गाड़ी रोकने की कोशिश करने के बावजूद, मैं उस पर नियंत्रण नहीं पा सका और अंततः बस पलट गई।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। **विधि सलाहकार**: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com |**website:** www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा**
द्वारा **आस्था प्रिंटर्स**, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **संपादक- संजय शर्मा**